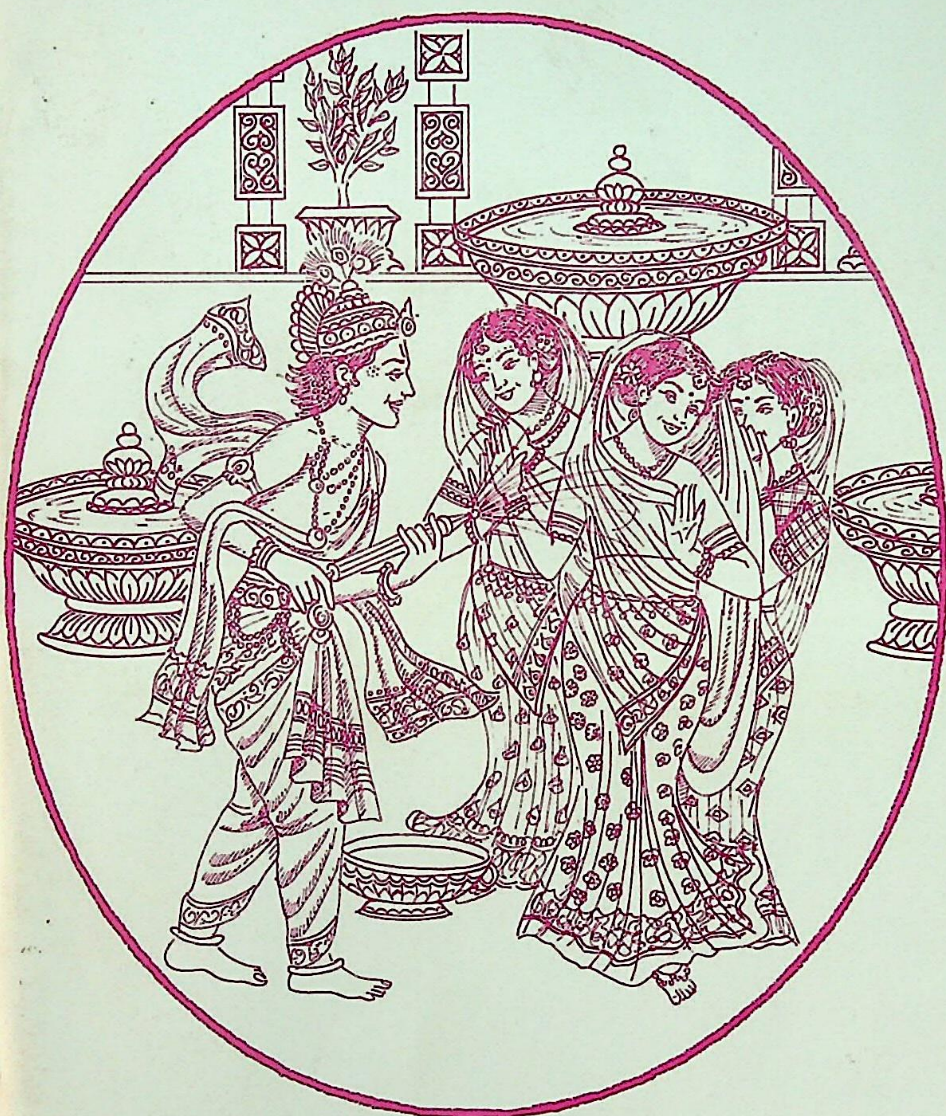
चौताल फागसंग्रह



रँग छिरकत कुञ्जबिहारी...

खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन, बम्बई-४.

श्रीः

चौताल फागसंग्रह

जिला जौनपुर ढेमाग्रामनिवासी कायस्थवंशावतंस श्रीशाधोलालजीने
रसिकजनोंके विनोदार्थ निर्माण किया

खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन बम्बई

संस्करण : जनवरी २००९, सम्वत् २०६५

मूल्य ३५ रुपये मात्र।

मुद्रक एवं प्रकाशकः
खेमराज श्रीकृष्णदास,™
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
मुंबई - ४०० ००४.

Printers & Publishers :
Khemraj Shrikrishnadass Prop: Shri Venkateshwar Press, Khemraj Shrikrishnadass Marg, 7th Khetwadi, Mumbai - 400 004.

Web Site : http://www.Khe-shri.com
Email : khemraj@vsnl.com

Printed by Sanjay Bajaj For M/s.Khemraj Shrikrishnadass Proprietors Shri Venkateshwar Press, Mumbai-400 004, at their Shri Venkateshwar Press, 66 Hadapsar Industrial Estate, Pune 411 013



श्रीः

चौताल फागसंग्रहकी विषयानुक्रमणिका

★

विषय.	पृष्ठ.	विषय.	पृष्ठ.
देवीशारद सुमिर मनावों हृदैसे जानी	७	अँगिया हमरी जदुराई आजु मसकाई	२२
सुमिरों मैं तो विन्ध्यभवानी सकल सुखदानी	,,	सब पूछत हैं वृजनारी कहां गे मुरारी	,,
जैं जैं काली महारानी हरो दुख भारी	८	वृजमें अतिधूम मचायो नन्दजीके लाल	२३
जंत्री तुही जगतारनि जैजै श्यामा	,,	रंग छिरकत कुंजबिहारी भिजें मेरी	,,
शिवशंकर दीनदयाल महावरदानी	९	रंगरेज बन्यो गिरिधारी रंग्यो मेरी	२४
वर आये हैं गौरा तुम्हारे बड़े सैलानी	,,	मोरि तन मन सुरति विसारी निठुर	,,
वर नाहीं करो बौराहा रहों दखारी	१०	सखि आयो न संग संघाती बसंतके	२५
तुम गजको फन्द छोड़ाई सुनो रघुराई	,,	डसि लीनों सखी तन काम भुअंगम	,,
सुमिरों हनुमान गोसाईं अरज सुनो मेरी	११	एक पतिया तो बनसेनि आई हो	
नर देखो पवनसुत खेल हृदै मन लाई		श्याम पठाई	२६
होरी खेलत पवनकुमार अंजनीके बारे		गोकुलकी तुम्ही महारानी राधिका	,,
जहँ राम लीन औतार सुरन हरषाई	१२	सखि औचट आजु निहारी हो नयन	२७
मुनि मांगत राजा राम लषन मोहिं दीजै	१३	भरिदेहु गगरिया हमारी कहैं वृजनारी	,,
मुनिसाथ चले रघुराई संग लघुभाई	,,	तनी आवो लाल मेरी गैल छैल जदुराई	२८
देवी कबलगि रहब कुँवारी उमिरि मोरि		राधिका मग जोहत ठाढ़ी श्याम तहँ	,,
गौरि पूजत जनकदुलारी बैठी फुलवारी		राधिकाके नैन रतनारे काजर सोहैं	२९
सखि ये दोउ भूपकिशोर समाजमें आई	१५	सखि कैसे कै रैन सिरात बिना बनवारी	,,
धनु भंग सुन्यो भृगुनायक परसु लै धायो	,,	वन मुरली बजावत श्याम रहा नाँहि	३०
हँसि बोलत जनकदुलारी सुनो सखि	१६	कान्हा देत मुसुकियन गारी धरे मेरी	,,
धनि धनि सिय तेरी भागि राम वर पाये	,,	सखि ऐसे निडर बनवारी गेंद गहि	३१
सिय राम ब्याहि घर आयो अवधके राजा	१७	तुहै ढूंढत नन्दको लाल कहां रहिउ	,,
सिय राम लषण दोउ जोरी हो खेलत होरी	,,	केकरे संग रैन बिताई भोर उठि आई	३२
रघुनन्दन अवधविहारी रंगभरि मारी	,,	मोरि खेइ लगावहु पार नैया बनवारी	,,
गोकुलाबिच जन्में कन्हाई सुरन सुखदाई	१८	गर टूटि गये मोतीमाला कहैं वृजबाला	३३
कान्हा रोको न गैल हमारी भरन-		अँगिया मेरी आजु बिगारी छैल गिरिधारी	,,
जावों पानी	,,	सखि नैहर सबही भुलाना हो सासुर जाना	,,
सखि ठाढे हैं श्याम गलीमें कली मोरी	१९	अब करिहौं मैं कौन बहाना गवन	
जहँ रहस रच्यो बनवारी सहित वृजनारी	,,	नियराना	३४
उठोहो वृषभानु किशोरी मची वृज होरी	,,	सखि पिय लखि रहत मलीना जोबन	,,
सखि जात अकेली नारी गहे बनवारी	२०	गोरी नैनन काजर दीना प्रान हरि लीना	३५
एक जात सखी अठिलाती बड़ी बेर	२१	गजगामिनि सेज बिछावै पियाको	,,
गोरी तिरछी नजरिसे निहारी नयन	,,	सैंयां धीरेसे बहियां गहौ रे बेसरिया	३६

विषय.	पृष्ठ
एक सुन्दरि नारि सलोनी खड़ी मग	३६
एक शशिवदनी मृगनैनी पियासे हँसि	३७
एक तिरछी ह्वै नारि निहारै नैन गहि	,,
एक लचकत आवत नारि काम छबि	३८
एक नारि विरोगकी मारी हो पंथ निहारी	,,
कैसे बीतै सैयां बिनु रैन भयो दुख	३९
जैसे भौंरा गुंजै वंशपोढ वैसे घन रोवै	,,
पपिहा पिय पिय कहि गावै नींद नहि	४०
सखि आये न कंत हमार तौ फागुन	,,
घर हमसे रहा नहि जाइ हो सांवलिया	४१
घटकीली सुन्दरि नारि पियामन भावै	,,
चितवनि तेरी बांकी छबीली बान सम	४२
चितवनि तेरी मारै कटारी नैन रतनारी	,,
नटनागरि नारि नवेली जोवन दूनो	४३
सैयां दूरिदेश मति जाहु कहों कर जोरी	,,
दगा दीनो छैल आधीरात विदेश	४४
निरदैया है श्याम हमारो भेजै नहि पाती	,,
गोरि मति करु बदन मलीन पिया तेरो	४५
दिन फरकत है सखि मोर सजन आजु	,,
गोरिया पियकर आवन जानी मनै	४६
कैसे आवों पिया तेरी सेज शरम आवै	,,
पिय सेजरसे उठि जाहु रैन रही थोरी	४७
पिय चाहत आपन काम दरद नहि आई	,,
मन मारे अंगनवांमें ठाढ़ी रसीली नारी	४८
सखि नई गवनेकी नारी सेज नहि आवै	,,
पिया तुम तौ चल्यौ परदेश उमिरि	४९
एक ठाढ़ि विरिछ तर नारी विरोगकी	,,
पिया छोड़ि दिहेउ सुधि मोरी सुनहु	५०
पियवा दूरि देशमें छाये हो फागुन	,,
सखी उमिरि मोरि लरिकाई करों चतुराई	५१
जहां रैनि भई अँधियारी घटा लगी कारी	,,
एक साल सदरबिच भारी हुकुम भयो	५२
अलबेली फिरै इक नारि मदनरस	,,
सखि कंत हमारो है छोट जोबन भयो	५३
तेरी तिरछी नजर मतवारी कतल करि	,,
लै संग रंगीली सैन मैन मदहारी	५४

विषय.	पृष्ठ
सखी नैनाको बान चलाइ कहां अब	५४
खेलैं हो निज फागु धमारी जहां सब	५५
धमारि	
मैं सुमिरों शारदा हो देवी सब देवनकी मूला	५५
धोखे जन्म सिराई सुजनजन राम राम	,,
आवै न कोई काम रामबिनु लाख करो	५६
अवधके राजा दनियां दशरथ लिहे	,,
दोऊ कुँअर निहारी जानकी देखै चली	,,
के यह धनुहां टारी जनक तेरे द्वार भीर	,,
रूप मोहनी दृग भाला सिया डारचो राम	५७
भीजै सखीको चीरा अवधमें होरी खेलैं	,,
रोकत नारि पराई जशोदा श्याम करै	,,
जशुदा तेरो जायो महलपर डोरी डारि	,,
पानी कैसे जाउँ रोकत श्याम डगरिया	५८
तुम कोटि करो अपनी अपना ललचो	,,
खेलैं वृज श्याम नई होरी	,,
फागुन बीता जाइ मोरी गुइयां आये	,,
तलफै जीव हमारा जोबनपर कबने	५९
वेसर गूजा नवै न जेठानी कोटि जतन	,,
मोहि विरहा अधिक सतावत हो वारे कैसे	,,
यह सूरतकी बलि जाहीं पिया जोबन	६०
नैना बने दरपनियां गोरि तोरी तिरछी	,,
तेरी सूरति जैसे नगिनवां हो पिया ऐहो	,,
ऐसी प्रेमकी प्यारी गोरी तोरि चितवनि	,,
मन मारे अटापर क्यों ठाढ़ी तोरि	६१
पिया आजु बाई भुजा मोरि फरकै	,,
जहवां लागि अथाई निशिदिन सुरमुनि	,,
राम राम गोहरावैं सुजन जन जो चाहैं	,,
सब मटुकी भरि भरि ठाढ़ी दही लै	६२
सुरति हमारि बिसारो सखी मधुवनमें	,,
सब सखियनके मन भावै सखो गोपाल	६३
जोगी अनल तन जारा संतो नदी बहै	,,
बड़े खेलारी मुरारी रे सखिया धै चोलिया	६४
लैगयो चीर हमारी रे सखिया चंचल	,,
मोरे हियकै तपनि बुझावैं ललिता	,,

विषय.	पृष्ठ.
मिले आजु हरषाई पिया मोंहि चूंदरी	६६
गुनको आगरि रूपकी सुंदरि नैहर दाग	,,
अभी हम दूनों कुल उजियारी	,,
कुमतिया दारुनि रोजैं लड़ै	६७
बेलवारा	
वृज करत विहार श्याम राधिका दूनों	
चन्द्र बदन मृगलोचनी हो शोभा अति	
एक सुंदरि नारि नगीना बनी जाकी	६८
चंचल चपल नवल नटनागरि अंगिया	,,
छैल बतिया मति भूलो तेरे शरन मैं	६९
भला नये जोवनवाली पियसे अठिलानी	,,
भला पियवा हुनि मारचो विरहाकी	७०
भला परदेशी पिया हो कहवाँ तुम छायो	,,
रहा कैसे जाइ मोरी गुइयां पियवा	७१
मोसे माँगै चन्द्र खिलौना कहवाँ मैं	,,
भरताल	
चलो पिया सोइ रही हो अंखिया	७२
भला सखियनके बीचे राधे अलबेली	,,
भला लचकत घर आवे नागरि अति	,,
भला कर लैकै गगरिया कामिनि मुसुकानी	,,
छैल मेरी बाँह मरोरत तोरे दरद न	७३
बंसवारा	
श्याम तोरी बाजै पैंजनियां हरिलीनो	,,
श्याम धरिदीजै अलबेला जहँ लागे	,,
अरिये कन्हैया रंगिढारी मोरि सारी	७४
अरिये अकेली पनियां न जैहों	,,
भला मेरेसे क्यों न लड़ी रे मैं ठाढ़ी	७५
अरिये हमारी अतरभरी अंगिया तुम	,,
लेज	
श्रीकृष्णचरनकी वलिहारी	,,
गोपी गोपाल खेलैं होरी	७६
मन बसै मोर वृन्दावनमें	७७
होली	
देखो रे ऐसी त्रिभुवन रानी	
जगदम्बासे विनय निहोरी	७८

विषय.	पृष्ठ.
रघुवरजी बैर करै ना	७८
कान्हाने मोंहि आनि ठगो री	७९
श्याम बिना मोंहि कुछ न सुहाई	,,
चलो री सखी श्यामको मनाई	८०
श्यामकी मोंहि बात है प्यारी	,,
बृजमें आजु होरही होरी	८१
बरजो तू हो जशोमति कान्हा	,,
बरजो यशुमति अपना मुरारी	८२
सांवरो जो मैं देखन पैहों	,,
सांवरो जो मैं देखन पावों	८३
सांवरो जहँ खेलत होरी	,,
सांवरेको चरित्र सुनो री	८४
राधा हरि खेलत होरी	,,
श्याम बिना होरी कौन खेलावै	८५
हे मुरलीके बजैया हमैं गारी देत	,,
मुरलीधर श्याम न आयो	८६
कस नहिं आवत तीर बड़े बेपीर	,,
काल कहां थे कन्हाई राति मुझे नींद	८७
वृजमें ऐसी होरी मचाई	,,
भला श्याम आयो है खेलन होरी	८८
कहिये ऐसी हाल हमारी	,,
प्रीतिकी रीति महादुख भारी	८९
आली री मैं सैयां संग सोई	,,
गोरिया रे विरहा तन जारी	९०
हेरत प्रीतम बैस बिताई	,,
भला सैयां हो मेरी बात न मानी	९१
बावरो सखि ज्ञान हमारा	,,
बावरो सखि ज्ञान है मेरा	९२
केशरबाग लगाई मजा बादशाह	,,
क्या तू गुमान करो जिन्दगीको	९३
कलजुगकी है दोहाई धर्म निबहव	,,
श्याम श्यामासे होरी खेलत आजु	९४
होरी खेलत रामलला	,,
आजु अवधपुर रंग चला	९५

इति चौताल फागसंग्रहकी अनुक्रमणिका समाप्त

शुभं भवतु

श्रीगणेशाय नमः

अथ

चौताल फागसंग्रह

★

चौताल १.

देवी शारदा सुमिरि मनावों हृदयसे जानी॥ सुमिरन करों राम अरु लछिमन, भरत भुआल बखानी॥ सुमिरन करों श्रीमातु जानकी हो, तुम हो तीनि लोककी रानी हृदयसे जानी॥१॥ शिवशंकर भोलाको सुमिरों, सुमिरों गौरि सयानी। फिरसे सुमिरों गनेशकी मूरति, अति सुन्दर पंडित ज्ञानी हृदयसे जानी॥२॥ करि सुमिरन अंजनीके नन्दन, मेरी अरज यह मानी। फिरि सुमिरों श्रीमातु भगौती हो, तुमहीं हौ आदि भवानी हृदयसे जानी॥३॥ तुलसिदास सुमिरन करि गावत, सुरसे ऐसी बानी। सब देवनसे आज्ञा लेके हो, बाजौं ढोल मँजीरा आनी हृदयसे जानी॥४॥

चौताल २.

सुमिरों मैं तो विन्ध्य भवानी सकल सुखदानी॥ विन्ध्य बहार बहै गंगाजल, शुचि लखि आसन ठानी। बजत नगारा भव भयहारा हो, पद पूजत जहँ लगि प्रानी सकल सुखदानी॥१॥ फहर फहर फहरात पताका, ताके भय अघहानी। मातु मैं बांधौं ढोल मँजीरा हो, गति ताल न होइ डगानी सकल सुखदानी॥२॥ भाव भक्ति मैं जानत नाहीं, राग हीं बानी। जून घरी एको नहि जानत, देवी चरन

हिये बिच आनी, सकल सुखदानी ॥३॥ तेरी शरन फागु मैं गावों, बसहु कंठ जन जानी। भागीरथी बलि चरननके हो, वरदानी तू कहवां भुलानी, सकल सुखदानी ॥ ४ ॥

चौताल ३.

जै जै काली महारानी हरो दुख भारी ॥ तीन लोकमें छत्र विराजै, पूजि रहे नर नारी। स्वर्ग औ खप्पर दोउ कर सोहत, देवी सिंह चढीं असवारी हरो दुख भारी॥१॥ मैं अजान जानी कछु नाहीं मेटो चूक हमारी। तुमरे भरोस रहत निशिवासर, मोहिं आइके लेत उबारी हरो दुख भारी ॥ २ ॥ दिन दिन दया करो मेरे ऊपर, प्रेमसहित ललकारी। संतन तारनि असुर संहारनि, तुम हो राजा वेनु दुलारी हरो दुख भारी ॥ ३ ॥ अमित-वेद महिमा जस गावत, सनकादिक त्रिपुरारी। तुलसिदास कहैं दोउ कर जोरे हो, देवी चरननकी बलिहारी ॥ ४ ॥

चौताल ४.

जंत्री तुही जगतारनि जैजै श्यामा॥ जेहि सुमिरे मन मगन होत है, सिद्धि होत सब कामा। गंगालहरमें शयन विराजत, तहाँ अखिल लोक विश्रामा हो जैजै श्यामा॥१॥ शिव सनकादि आदि ब्रह्मामुनि, जपैं तिहारो नामा॥ अमित प्रभाव वेद यश गावत, यश गावत नर अरु वामा हो जैजै श्यामा॥२॥ अष्टभुजापरमान अम्बिका दैत्य कीन संग्रामा। दैत्य मारि भुइँ भार उतारे हो तुम रहेव नन्दजीके धामा हो जै जै श्यामा ॥ ३ ॥ जगदम्बा जै जयति पुकारों,

जहाँ तुम्हारो ठामा । यह पद बसत दास तुलसीके हो, मोहिं दीजे भक्तिपद रामा हो जे जे श्यामा ॥ ४ ॥

चौताल ५.

शिवशंकर दीनदयाल महा वरदानी ॥ अंग विभूति लिये मृगछाला जटा गंगा अरुझानी । माथे उनके तिलक चन्द्रमा हो, जाके तीनि नयन जग जानी महा वरदानी ॥१॥ वाहन बयल त्रिशूल विराजत, कर नागिनि लपटानी ॥ भांग धतूर बेलकी पाती हो, भोला और जहर विष सानी महा वरदानी ॥२॥ श्वेत वसन गर मुंडन माला, संगमें गौरि भवानी ॥ लिंग पूजावत डमरू बजावत तहँ गावत बहु विधि बानी ॥३॥ महादेव देवनके राजा, और गुनन की खानी । तुलसिदास चरनन पर मोहित, तहँ गाल बजावै सुरतानी ॥४॥

चौताल ६.

वर आये हैं गौरा तुम्हारे बड़े सैलानी ॥ भूत पिशाच संग ले आये, बोलत बम बम बानी । जेहि देखो तेहि अशुभ भेष धरे, तेहि संग न एक निशानी बड़े सैलानी ॥ १ ॥ आपु सवार बयल डूँड़े पर, जटा गंग अरुझानी । चंद्रभाल गर मुंडमाल लसे, दोउ कर नागिन लपटानी बड़े सैलानी ॥२॥ भांग धतूर चूर लै फांकत, महिमा जात न जानी । मातु पिता पुर लोग शोच वश सुनि गौरि हृदय हरषानी बड़े सैलानी ॥३॥ गई बरात द्वारके चारे, लखि सब नारि परानी । द्विज भगीरथ शम्भु शम्भु भजु भोलाबाबा बड़े वरदानी बड़े सैलानी ॥ ४ ॥

चौताल ७.

बर नाही करों बौराहा रहौं बरु बारी ॥ कठिन जोग तप किहेउ भवानी, विधिने रच्यो विचारी। नारद मुनि तोर का रे बिगारेउँ, बर खोजेउ है विषधारी रहो बरु बारी ॥१॥ महादेव जब चले बियाहन, मुंडमाल गर डारी। सर्पन की जो कौपीन बनी है, तिरशूल लिहे कर भारी रहो बरु बारी ॥२॥ देव दनुज सब भये बराती, सबै लोग हितकारी। माथे उनके तिलक चंद्रमा हो, अरु वृषभहिकी असवारी रहो बरु बारी ॥३॥ निज वाहन जब साजि गये हैं, आगे चले मुरारी। सहित समाज साज सब सुन्दर, लखि हरषित भईं पुर नारी रहो बरु बारी ॥ ४ ॥

चौताल ८.

तुम गजको फन्द छोड़ाई सुनो रघुराई ॥ गज अरु ग्राह लड़ै जल भीतर, गज प्रभु टेर सुनाई ॥ गजकी टेर सुन्यो रघुनन्दन प्रभु तुरतै आइकै बचाई सुनो रघुराई॥१॥ द्रोपदि नारि कि लज्जा राख्यो, तनपर चीर बढ़ाई। शरन शरन करि तुमहिं पुकारत, तब प्रभु तेहि छन भयो सहाई सुनो रघुराई ॥२॥ प्रहलादै पर्वतसे गिरतै, अपने अंग लगाई। कंसको मारि गदर करि डारेउ हो, सब गोपिन सुखदाई सुनो रघुराई ॥३॥ और अनेक संतन तार्‍यो, जे जे शरन तकाई। भागीरथी पर बहुत सहायक प्रभु तुम्हारो सुयश जग छाई सुनो रघुराई ॥ ४ ॥

चौताल ९.

सुमिरों हनुमान गोसाईं अरज सुनो मेरी ॥ अरज करों मेरी गरज निवारो, काटहु दुखके वेरी। निशिवासर सुमिरों हिय भीतर, मोंहि आस चरन गति तेरी अरज सुनो मेरी ॥१॥ आयों शरण तिहारे स्वामी, हरहु दुःख सब घेरी। आईके दूरि करो दुख पातक, दुष्ट हनहु प्रभु हेरी अरज सुनो मेरी ॥२॥ तुम उदार समरथ बड़ नीको मैं व्याकुल है टेरी। दास गोहारि करो दुख भंजन मेरी ओर करो तुम फेरी अरज सुनो मेरी ॥३॥ तुलसिदास दुख दूरि किहेउ है, दीनी सुखकी ढेरी ॥ रामके दूत बुद्धिके सागर, सुधि लीजै तू संतनकेरी अरज सुनो मेरी ॥ ४ ॥

चौताल १०.

नर देखो पवनसुत खेल हृदय मन लाई ॥ रामकाज औतार लिहो, संतन पर होत सहाई। निशि वासर सेवा रघुवरजीकी, उठी प्रात चरणन शिर नाई हृदय मन लाई ॥ १ ॥ जो कोई गर्व करै वसुधामें, तहाँ पवनसुत जाई। मारि निकारि दूर करि दुष्टन, उनको यमलोक पठाई हृदय मन लाई ॥ २ ॥ गर्व कियो लंकाके राक्षस, रामसे कीन लड़ाई। ताहि मारि सुरधाम पठायो हो, देवन बन्दि कटाई हृदय मन लाई ॥ ३ ॥ और कहां लै गावों स्वामी, गावत थाह न पाई। तुलसिदास प्रभु दूत पुकारत, पद सेवत श्रीरघुराई हृदय मन लाई ॥ ४ ॥

चौताल ११.

होरी खेलत पवनकुमार अंजनीके बारे ॥ अंजनिके औतार लियो तब लागत भूख पुकारे । होत प्रात रवि ग्रासि लियो है, तिहुंलोक भयो अंधियारे अंजनी बारे ॥ १ ॥ शत योजन परमान सिन्धुको, उतरि गयो वहि पारे । अमृतफलको बाग उजारत, जहं सियको शोक निवारे अंजनीबारे ॥ २ ॥ पैठी पाताल तोरि जमकातरि, महिरावनको मारे । राम लषन बलि दीन चहत जब, प्रभु संकट तुरत विसारे अंजनीके बारे ॥ ३ ॥ लंका जारि उजारि दियो है, कंचन कलश बिगारे । तुलसिदास महिमा रघुवरजीकी, सब निश्चर रन बिच हारे अंजनीके बारे ॥ ४ ॥

चौताल १२.

जहँ राम लीन औतार सुरन हरषाई ॥ राजा दशरथ गृह नौबत बाजे, घर घर बजे बधाई । विप्र बोलाइके वेद पढ़ावत, जहँ कंचन देत लुटाई सुरन हरषाई ॥ १ ॥ भइ अति भीर धीर न कोउ धरे, रामको देखन आई । का बरनों रघुवरजी की शोभा हो, जाकी उपमा बरनि नहिं जाई सुरन हरषाई ॥ २ ॥ महा अनन्द अवधपुर वासी, घर घर नाच कराई । जहँ देखो तहँ थेई थेई हो, सखियें सब मंगल गाई सुरन हरषाई ॥ ३ ॥ धनि है भागि मातु कौसल्या, रामहि गोद खेलाई । धनि तुलसी धनि अवधनगर सब, धनि प्रगटे सुर सुखदाई सुरन हरषाई ॥ ४ ॥

चौताल १३.

मुनि माँगत राजा राम राम लषन मोहिं दीजे ॥ असुर समूह सतावत मोहीं, राम लषनको दीजे। संग मोरे चलहिं निशाचर मारहिं, रउरे इतना सुयश जग लीजे लषन मोहिं दीजे ॥१॥ सूख गयो बतिया सुनि मुनिकी, कवन उतर हम दीजे। राम लषन मोरी आंखीके पुतरी हो, अब कवन जतन हम कीजे लषन मोहिं दीजे ॥ २ ॥ चारों तनय प्रानसम मोरे औरनको मुनि लीजे। दोउ करकमल जोरि मुनि आगे हो, जल दृगन बहै तन भीजे लषन मोहिं दीजे ॥३॥ मुनि समझाय कह्यो राजासे, शाप देउँ कुल छीजे। गइ सब शोच महीपति मनकी हो, देके राम बिदा मुनि कीजे लषन मोहिं दीजे ॥ ४ ॥

चौताल १४.

मुनि साथ चले रघुराई संग लघु भाई। प्रथमहि जाइ ताड़का मार्‌यो, असुर समूह भगाई। मुनि मन हरष लषन रघुवर लखि, ऐसी शोभा वरनि नहिं जाई संग लघु भाई ॥१॥ तब मुनिसे बोले रघुराई, यज्ञ करहु हरषाई। मुनिवर यज्ञ करन जब लागे हो, तब धावा मारीच रिसाई संग लघु भाई ॥२॥ मारे बान राम तेहिके उर, शत जोजन उड़ि धाई। विश्वामित्र देखि हरषाने हो, अति आनंद उर न समाई संग लघु भाई ॥ ३ ॥ कह मुनि राम चलो मिथिलापुर, धनुषयज्ञ लखि आई। हरषि चले मुनि साथ महीपति, गयो जनकनगर नगिचाई संग लघु भाई ॥४॥

चौताल १५.

देवी कब लगि रहब कुमारी उमिरि मोरि बारी॥ जगदम्बा पूजनको सीता साजि चली फुलवारी। करि पूजा बर मांगत हंसि हंसि देवी आरति लेउ उतारी उमिरि मोरि बारी॥१॥ बोली भवानी मंडप भीतर, सुनिये जनकदुलारी। होइहैं ब्याह सुभग वर लायक, सिया मानहु वचन हमारी उमिरि मोरि बारी॥२॥ सरजू तीर अयोध्या नगरी, प्रगटे अवधबिहारी। तेही संग ब्याहि जाहु सिया सुन्दरि, जेहि सुमिरत सिद्ध अचारी उमिरि मोरि बारी॥३॥ जक्त मातु सिय तुम प्रगटी हो, जक्त पिता धनुधारी। भागीरथी जिनका गुन गावत, हिय भीतर कपट विसारी उमिरि मोरी बारी॥ ४॥

चौताल १६.

गौरी पूजत जनक दुलारी बैठी फुलवारी॥ करि असनान साज सब साज्यो, पहिरि गुलाबी सारी। गंगाजलकी झारी लिहे करे देवी कर दरशन करि बलिहारी बैठी फुलवारी। ॥ १ ॥ तेहि छन सामा ले थारीमें आरति लेत उतारी विविध भांति पूजा करि सुमिरत, वर मांगति है भुज चारी बैठी फुलवारी॥२॥ बोली भवानी अंतरजानी, बानी सुनो हमारी। अवध नरेशके बालक रघुवर, तेरे मांग सेंदुर उन डारी बैठी फुलवारी॥३॥ परा भरोस सियाजीके मनमें, अब ना रहों कुमारी। तुलसीदास दोउ कुंवर खड़े जहां, सब हरषित नर अरु नारी बैठी फुलवारी॥ ४॥

चौताल १७.

सखि ये दोउ भूपकिशोर समाजमें आई ॥ कठिन कठोर धनुष शंकरको, नहिं कोउ लेत उठाई । भूप सहस दश एकहि बारा हो, धनु छुवत हून होइ जाई समाजमें आई ॥१॥ थाके वीर धनुष नहिं हालत, किहो अनेक उपाई । तोरिहैं धनुष अवधके बालक, दोउ कुँअर खड़े मुसकाई समाजमें आई ॥ २ ॥ गुरू आज्ञा लै उठें रामजी, धनुहां हाथ लगाई। लेत उठावत कोउ नहिं देखा हो, धनु तोरिके देत बहाई समाजमें आई ॥ ३ ॥ टूट पिनाक शब्द भय भारी, रविरथ नहिं ठहराई । तुलसिदास हिये हुलसि हुलसि कहि, सब देवनके मन भाई समाजमें आई ॥४॥

चौताल १८.

धनु भंग सुनो भृगुनाथ परशु लै धायो ॥ संतस्वरूप बीर तन सोहै, रोष भरे चलि आयो । देखन भूप भयो तन ब्याकुल, बिनु पूछत नाम बतायो परशु लै धायो ॥१॥ कौशिक राम लषन मिथिलापति, आइ सभै शिर नायो । पूछत हाल जनक नहिं बोलत, करि कोप कुठार उठायो परशु लै धायो॥२॥ कांपे जनक सभै मिथिलापुर, लछिमन रोष दिखायो। का अतिचूक भई भृगुनायक, केहि कारण रोष बढ़ायो परशु लै धायो॥३॥ लषन कहा सुनिये मुनिनायक, का अपराध लगायो । रामशरन भजु सिय रघुवरजीको, हम रामजन्म सुनि पायो परशु लै धायो॥४॥

चौताल १९.

हँसि बोलत जनकदुलारी सुनो सखि प्यारी। पिता हमार स्वयंवर ठान्यो जुटे भूप जहँ भारी। जहवां धनुष रहे शंकरजीको, मैं तो ठाढी हों कंत निहार सुनो सखि प्यारी॥१॥ मैं अपने मन सोच करत हौं सुनि भृगुनन्दन गारी। इनको कोइ समुझावत नाहीं हो, बरु रहिजाउँ बारि कुँआरी सुनो सखि प्यारी॥२॥ मैं अपने पति जानि चल्यों सखि, विधिको लिखा विचारी। होइहै व्याह संग रघुवरजीके, उनके पद प्रेम हमारी सुनो सखि प्यारी॥३॥ तोरयो धनुष कंत छनमाहीं विधि लिखनीको टारी। भागीरथी जैमाल लिहे कर, सिय रघुवरके गर डारी सुनो सखि प्यारी॥४॥

चौताल २०.

धनि धनि सिय तेरी भागि राम वर पायो॥ वृन्दावनसे बांस मंगायो, रचि रचि मांड़ौ छायो। कंचनखंभ गड़े बेदियापर, गजमुक्तन झालरि लायो राम वर पायो॥१॥ उड़ा विमान चले रघुनन्दन, साजि जनकपुर आयो। सब सखि सोवत अपनी महलमे हो, मुनि नारद खबरि जनायो राम वर पायो॥२॥ ब्रह्मा द्वारको चार करावैं, सुर दुंदुभी बजायो। कंचन थारमे आरती साजत, सब आरति लै लै धायो राम वर पायो॥३॥ नख सिखलों सियको सखि साजै, भूषण पट पहिरायो। ब्याह होत सखि मंगल गावत, जहँ तुलसिदास गुण गायो राम वर पायो॥४॥

चौताल २१.

सिय राम व्याहि घर आयो अवधके राजा ॥ देखत मोहिं रहे सुर राजा, दशरथकेर समाजा । मस्त गजनपर हैकल सोहत, तापै बाजैं अनेकन बाजा अवधके राजा ॥१॥ छैल छबीले चढ़ि घोड़नपर, थोरी उमिरिके राजा । नई नई नारि झरोखेसे चितवत, सब देखैं चलीं तजि काजा अवधके राजा ॥२॥ सजी बरात नगर नियरानी, द्वारे डंका गाजा । सुनि रनिवासन अपनी महलपर, सब अंग आभूषन साजा अवधके राजा ॥३॥ कुलकी बधू तुरित उठि धाईं, तजि अपनी सब लाजा । दुलहा दुलहिनि देखि नयन भरि दुख दूरि महीपति भाजा अवधके राजा ॥ ४ ॥

चौताल २२.

सिय राम लषन दोउ जोरी हो खेलत होरी ॥ महाबीर डफलात लगावैं, अंगद ढोलक जोरी । खेलत फाग महा मधुरे सुर, अरु खेलत है सब गोरी हो खेलत होरी ॥१॥ नारद हैं कर बेन लिये जहँ, शारद सब रंग घोरी । गिरजा-पति जहँ डमरू बजावत, चतुरानन वेद भनो री, हो खेलत होरी ॥२॥ सुरपुर नरपुर नागपूरकी, आनि भई एक ठोरी । उड़त गुलाल रहत नभ छाये हों, कोउ काहू न जात लखोरी हो खेलत होरी ॥३॥ मची कीच मग बीच अवधके, रंग चलै चहुँओरी । तुलसिदास सुर तान मिलावत, जहँ बिहरत जनककिशोरी हो खेलत होरी ॥ ४ ॥

चौताल २३.

रघुनन्दन अवधबिहारी केशर रंग मारी। अबिर गुलाल कुमकुमा केशरि, घोरि भरैं पिचकारी। लखि लखि रंग अंग पर मारत, मोरी ललित भई तन सारी केशर रंग मारी ॥१॥ चंचल चोट लगि छतिया पर विकल भई सब नारी। मोतिनकी लर टूट गई सब, मोरी अंग भई मतवारी केशर रंग मारी ॥२॥ बांके छैल संग रघुवरके, देत निलज होइ गारी। अबिर गुलाल कपोलन मींजत, मोरि धरि बहियां ललकारी केशर रंग मारी॥३॥ खेलत फागु अवधके वासी, सियकी ओर निहारी। दास दयाल दया समरथकी हो, धनि धनि सिय जनकदुलारी केशर रंग मारी ॥ ४ ॥

चौताल २४.

गोकुला बिच जन्मे कन्हाई सुरन सुखदाई। जेहि दिन जन्म भयो कान्हाको, देव सुमन झरिलाई। सुर ब्रह्मादि सभै चलि आयो हो, जाके चरण कमल शिर नाई सुरन सुखदाई ॥ १ ॥ एक समय पूजाके कारण सुरपति गयो रिसाई। मूसरधार मेघ जल बरसत, सब गोकुल लेत बचाई सुरन सुखदाई ॥ २ ॥ एक समय गेंदाके कारन, जमुना कूदे कन्हाई। पैठि पताल नाग फन नाथे हो; जाके फनपर बेन बजाई सुरन सुखदाई॥३॥ एक समय गउवन कर बाछा ब्रह्मा लीन चोराई। दीनदयाल सभैको सिरजत, जिनसे कोई पार न पाई सुरन सुखदाई ॥ ४ ॥

चौताल २५.

कान्हा रोंको न गैल हमारी भरन जावों पानी ॥ रोज

बरोज भरो जमुना जल, चाल चलो अठिलानी ॥ जाने चहो तो जाने न पईहो, तुम हौं अलमस्त जवानी भरन जावों पानी ॥१॥ कबसे भयो बिरजको ठाकुर, हम तुमको नहिं जानी । देर भई घर जानेदे मोहन, मोहिं सुनि घर साधु रिसानी भरन जावों पानी ॥२॥ अहिर गरूर जरूर न मानैं बोलै अतिसे बानी। चोर बरोर बसत यह ब्रजमें हो, तुम रोकत नारि बिरानी भरन जावों पानी ॥३॥ रान्ह परोसिनि ताना मारे, कहैं आनकी आनी । द्विज हरिचरन शरन सतगुरुजीके, सखि तुम असि चतुरि सयानी भरन जावों पानी ॥ ४ ॥

चौताल २६.

सखि–ठाढे हैं श्याम गलीमें कली मोरी तोरी ॥ मैं इतसे जलसे जल भरलाई, बर जोरिकै गागरि फोरी। हमसे कहत चलो वृन्दावनमें हो, घर मातु पिताकी चोरी, कली मोरी तोरी ॥१॥ मैं बाला यह भेद न जानों, बोलत बैन कठोर । धै कुच लचत गचत कँगना गहि, मोरि धरि बहियाँ झकझोरी कली मोरि तोरी ॥२॥ हरे सखीका हाल कहो नँदलाल करे बरजोरी। जुवती देखि झपटि रँग डारत, वे तो मानत नाहिं एको री॥३॥ नैनकोर मोहनी लगावत मुखसे त्रास करो री । द्विज हरिचरण शरण सतगुरुके हो, रस जोबन लेत हलोरी कली मोरी तोरी ॥ ४ ॥

चौताल २७.

जहँ रहस रच्यो बनवारी सहित वृजनारी॥ कोउ सखि

छिन लेत हैं मुरली कोउ पट लेत उतारी। कोउ सखि बाँह पकरि बेलम्हावत, कोउ चूंदरि चुनिकै संवारी सहित बृजनारी ॥ १ ॥ बरबस अंग पकरि पहिरावत, होत महासुख भारी। चोटी गूथि दियो दृग अंजन, कोउ पान खियावत प्यारी सहित बृजनारी॥२॥ पावन पावजेब कटि किंकिनि, कर कंगन रवकारी। बाजत मृदंग नाचत गति मोहन, सखि हँसि हँसि श्याम निहारी सहित बृजनारी ॥३॥ प्रेमसहित प्रभु भाव बतावैं, देत देवावत गारी। द्विज हरिचरन सखी रस बश भईं, तनकी सुधि नाहिं सम्हारी सहित बृजनारी ॥४॥

चौताल २८.

उठो हो वृषभानुकिशोरी मची बृज होरी ॥ जूथ जूथ जुवती बनि आईं, बरसानेकी खोरी। कैकै सिंगार अभूषन साजत, सखि शशिवदनी दिन थोरी मची बृज होरी ॥१॥ कनक कटोरा चोवा चन्दन, केशर भरे कमोरी। लखि रंग अंग पर मारत, मानो चहुंदिशि मेघ झकोरी मची बृज होरी ॥ २ ॥ ललकारै ललिता सखियनको, निरखि श्यामकी ओरी। लै करतार मधुर सुर गावत, सखि आजु घात भलि मोरी मची बृज होरी ॥ ३ ॥ सूरश्याम समझो वह दिन जब, कियों चीरकी चोरी। वसनविहीन निकट नहिं आवत सखिये बिनवैं कर जोरी मची बृज होरी ॥ ४ ॥

चौताल २९.

सखि जात अकेली नारि गहे बनवारी ॥ सुनो श्याम मनमोहन प्यारे, कछु एक अरज हमारी। बात कहत मुख

हाथ चलावत, हम भागत नाहिं बिहारी गहे बनवारी ॥१॥ निश्चय एक मोहिं प्रभु दीजे, कुल संकोच बिसारी। मोसे कपट छोड़ि जदुनन्दन, तुम साँची कहो गिरधारी गहे बनवारी ॥२॥ सुनि बानी हरषाय कह्यो प्रभु, सुनो राधिका प्यारी। तुम्हरी सुरत तनिक नहिं बिसरत, सखि तुमपर प्रेम हमारी गहे बनवारी ॥३॥ कह राधा कुछु सुनो सामरे, बड़े बेर भई भारी॥ द्विज हरिचरन विहँसि कहै ग्वालिनि, तुमहीं पति हो हम नारी गहे बनवारी ॥ ४ ॥

चौताल ३०.

एक जात सखी अठिलाती बड़ी बेर रसमाती ॥ कोउ एक सखा जाहु ग्वालिनि लग, लेहु भेद बहु भाँती। केहि कारण कहाँ जात हो ग्वालिनि, कोउ और न संग संघाती बड़ी रसमाती ॥ १ ॥ बोल उठा एक ग्वाल सखीसे, तुम अकेलि कहँ जाती। श्याम तुमैं ठाढ़े मग जोहत, तुम कस न मिली विलखाती बड़ी रसमाती ॥२॥ यह मन भावा सब सखियनके, दरशनको ललचाती। हमरो हार गिरो मुक्तन कर, सोइ हेरनको हम आती बड़ी रसमाती ॥ ३ ॥ ऐसो जोग लगो मधुबनमें, केलि करहु दिन राती। सूरश्यामसे विछुरन मति करू, कछु कहना हमार उनाती बड़ी रसमाती ॥ ४ ॥

चौताल ३१.

गोरी तिरछी नजरिसे निहारी नयन गहि मारी ॥ एक माँगन हम माँगी हो गोरी, उपजें अंग तिहारी। कंचनकलश

उठे छतिया पर, वह देहु हमैं बृजनारी नयन गहि मारी ॥ १ ॥ लखि ललचाय जीवन माँगत हौ, हम नहिं देब मुरारी । ई जोबना मोरे पियको खेलौना हो, खेलै कर चोलिया बिच डारी नयन गहि मारी ॥ २ ॥ आजु बसो प्रभु धाम हमारे, हियसे कपट बिसारी । रसबस खेल करो हमरे सँग, मोहिं दरश देहु गिरिधारी नयन गहि मारी ॥ ३ ॥ बयन मानि कामिनि प्रण राख्यो, खेल्यो खेल खेलारी । सूरश्याम रसिया मनमोहन, जैसे भौंरा गूँजे फुलवारी नयन गहि मारी ॥ ४ ॥

चौताल ३२.

अंगिया हमरी जदुराई आजु मुसकाई ॥ धाइ धरे भरि अंकन कंकन, हमैं लेत उर लाई । चूमत अधर सुधारस हँसि हँसि, मैं तो तन मन बहुत लजाई आजु मुसकाई ॥ १ ॥ तापर छीन लेत शिर चूनरि, जमुना देत बहाई । ऐसे नशीलके शील न आवत, यह कौतुक कौन सिखाई आजु मुसकाई ॥ २ ॥ ओरहन नाहीं लेत जसोमति, तुमसे देत बताई । गलबिच माल भाल बिच वेंदी हो, नकवेसरि मोती लगाई आजु मुसकाई ॥ ३ ॥ कौनी चोट चपेट सखी मोर, हार हमेल हेराई । भागीरथी सखि श्याम सिखावत, बसबै औरे पुर जाई आजु मुसकाई ॥ ४ ॥

चौताल ३३.

सब पूछत हैं बृजनारी कहां गे मुरारी । व्याकुल फिरत सकल बृजबाला, भूषण वसन बिसारी । मुख नहिं पान नयन

नहिं अंजन, शिर बंदी धरत हैं उतारी कहां गे मुरारी ॥१॥ लता विटप फल फरैं न हरि बिनु, सूखि गई फुलवारी। निरस भये रस भौंरा न पावत, भौंरा बिहबल फूल निहारी कहां गे मुरारी ॥२॥ कोउ एक कहे आज हम देखा, सखा सहित गिरिधारी। जमुना निकट पर मुरली बजावत, वे तो खेलत खेल खेलारी कहां गे मुरारी ॥३॥ सुनि हरषाइ चलीं बृजवनिता, हरिको जाइ पुकारी। द्विज हरिचरन शरन तकि आयो हो, प्रभु राखहु छोह हमारी कहां गे मुरारी ॥४॥

चौताल ३४.

बृजमें अति धूम मचायो नन्दजीके लाला ॥ साजि श्रृंगार राधिका ठाढ़ी, नख सिख सुन्दर भाला। और सखी सब साजि चलीं सँग, जुटि गई जहवां सब ग्वाला नन्दजीके लाला ॥१॥ जितने बाजा संग लिहे हैं, बाजत एकै ताला। हो हो करि होरी सब गावत, लौ लासी लिहे बृजबाला नन्दजीके लाला ॥२॥ तकितकि घात सखिनपर मारत, भरि भरि रंग गोपाला। लै गुलाल हरिको सखि मारत, मानो हरी ह्वै गये मतवाला नन्दजीके लाला ॥३॥ कंचनके पिचके छूटत ज्यों, बरसत मेघ कराला। राम अवतार भीजि तेहि औसर, सब लखि सुर होत निहाला नन्दजीके लाला ॥४॥

चौताल ३५.

रँग छिरकत कुञ्जबिहारी भिजै मेरी सारी ॥ छिरकत रंग फिरै जैसे भौंरा, कर खींचत पिचकारी। ललकारत मारत सब सखियन, वैतौ कूदेउ गोलमझारी भिजै मेरी

सारी ॥१॥ धै लीनो मोहनको सखियें, हर हर कै रंग डारी। झूर अबीर मलत मुख ऊपर, नख सिखसे ललित बनवारी भिजै मेरी सारी ॥२॥ खेलत फागु मध्य सखियनके, धै धै चोलिया फारी। रसिया कान्ह मलत दोउ जौवन, नया जोबन देत बिगारी भिजै मेरी सारी ॥३॥ हाहा करत एक नहिं मानत, मलत कपोल विहारी। द्विज हरिचरन श्याम रसमाते हो, रस लै वृषभानु दुलारी भिजै मेरी सारी॥४॥

चौताल ३६.

रँगरेज बन्यो गिरिधारी रँग्यो मेरी सारी॥ कुसुमरंगकी सारी रँग्यो है, तामें सुरुख किनारी। चोलिया रंग दियो नीले रंग, तामें चित्र बने फुलवारी रँग्यो मेरी सारी॥१॥ जो जो वसन रंगके काबिल, सो सो रंग्यो मुरारी। हँसि हँसि श्याम रंगाई मांगत, हमको देहु जोबन दोउ भारी रंग्यो मेरी सारी ॥२॥ चन्द्रमुखी बोलत भइ बाना, लेहु सोन भरि थारी। जो रसके भूखे मनमोहन, सो तो अबहिं उमिरियाकी बारी रंग्यो मेरी सारी॥३॥ हे नंदलाल माल हम देवें धीर धरो दिन चारी। द्विज हरिचरन कहा नहिं मानत, दोनोंजोबनाको दलिमलि डारी रंग्यो मेरी सारी॥४॥

चौताल ३७.

मोरी तन मन सुरति विसारी निठुर बनवारी॥ कहि न जात बिछुरन कर वेदन, सहि न जात दुख भारी। उठत कराहि आहि करि बैठत, मोंको विरहा अगिनि तन जारी निठुर बनवारी ॥ १ ॥ छन आंगन पिय पिय करि घुमरे

छन चढ़ि जात अटारी। छन पछितात दुनो कर मींजत पिया का तकसीर हमारी निठुर बनवारी ॥२॥ भूले असन वसन सुधि नाहीं, भूलि गई तन सारी। दूनी पीर उठत उर अंतर, सूनी सेजिया न जात निहारी निठुर बनवारी ॥ ३ ॥ चहुँदिशि फिरत राधिका नागरि कोकिलकी अनुहारी। द्विज हरिचरन शरन सतगुरुजीके, मोहिं आनि मिले गिरिधारी निठुर बनवारी ॥ ४ ॥

चौताल ३८

सखि आयो न संग संघाती वसंतके घाती ॥ आई वसंत बहार सखी मैं, धीर धरों केहि भांती। चम्पा चमेली फूलि रही मधुवन, जहँ भौंरा झुकैं बहु भांती बसंतके घाती ॥१॥ साजि सिंगार द्वारपर ठाढ़ी, विनु मोहन अकुलाती। जाके पिया परदेशमें छाये हो, वाकी कैसे कटै दिन राती बसंतके घाती ॥२॥ चकृत भई सेजके ऊपर, रोइ रोइ पीटै छाती। बिरह बेहोश होश नहिं आवत, वे तो गहिके कंगन पछिताती बसंतके घाती ॥३॥ अहो सखी सब एक मत करिकै, लिखो श्यामको पाती। द्विज हरिचरन श्याम कुबरीवश, विष खाइ सबहि परिजाती बसंतके घाती ॥४॥

चौताल ३९.

डसि लीनो सखी तन काम भुअंगम कारे ॥ चितवत हैं मुसकात लोभ भरि, जादूसे मोहिं मारे। औषध मूल एको नहिं लागत, सब गुनियनके गुन हारे भुअंगम कारे ॥१॥ आवत लहरि बिरह विषकी है, कोई वैद विचारे।

ऊधो जाइ कहो माधोजीसे, बृज ओषद देत सिधारे भुअंगम कारे ॥२॥ दूनी पीर बढ़ी विषधरकी, बिनु प्रभु को दुख टारे। मदनगोपाल लाड़िली विनवत, उनहीं विष लेत उतारे भुअंगम कारे ॥ ३ ॥ है कोइ जाइ कहे प्रीतमसे, बृजको काहे बिसारे। सूर श्याम आवनकी आसा हो, सखिये सब साज सिंगारे भुअंगम कारे ॥ ४ ॥

चौताल ४०.

एक पतिया तो वनसेनि आई हो श्याम पठाई॥ ऊधो हरिके परम सनेही, सो पतिया ले आई। कोउ बांचत कोउ नयन लगावत, कोउ लेत हिया विच लाई हो श्याम पठाई ॥१॥ राधे तुरित चली मधुवनको, सखियन संग लगाई। ढूँढत ढूँढत गई कुंजन वन, जहँ कान्हाने मुरली बजाई हो श्याम पठाई॥२॥ ठाढ़ कदमतर केलि करत हैं, सखियन प्रेम बढ़ाई। तहँ राधे पहुँची तेहि औसर, जहँ श्याम खड़े मुसकाई हो श्याम पठाई ॥३॥ धरि बहियां पूँछत मृगलोचनि, घटिहा भयो कन्हाई। सूरश्याम सखियन लखि विहँसत, तोहिसे न करब चतुराई हो श्याम पठाई ॥४॥

चौताल ४१.

गोकुलकी तुही महारानी राधिका रानी॥ भौंह ललाट महा अति सुन्दर, अँखियां सुरमादानी। मुखविच पान तान कहि विहँसत, जाके दांतन मीसी समानी राधिका रानी॥१॥ जोबन सुभग भये छतिया पर, चोलिया धै धै तानी। केहरि कटि पटतर कछु नाहीं हो, लहँगा नहिं जात

बखानी राधिका रानी ॥ २ ॥ बरन बरनके भूषन कपड़ा, पहिरत नारि सयानी। के नख सिख अंग सँवारत नागरि, कर दरपन ले मुसकानी राधिका रानी ॥३॥ चित चरित्र कहां लगि बरनों, अद्भुत रूप भवानी। जिनके बस हैं श्री यदुनन्दन, तिनकी गति जात न जानी राधिका रानी ॥४॥

चौताल ४२.

सखि औचट आजु निहारी हो नयन कटारी ॥ ईंगुर बुंद भौंह बिच राजति, कजरा नैन सँवारी। नकबेसरि चमकत जैसे दामिनि, चोलियाबिच जोबन भारी हो नयन कटारी ॥१॥ गोरे वदन सखि लचकत आवै, ओढे बसंती सारी। कटि पातरि लहँगा अति सोहत, तामे मोतियन लागि किनारी हो नैन कटारी ॥२॥ सूरति देखि चकित सुर मुनि भये, मानौं सांचके ढारी। चितवत नयन बयन नहिं आवत, हम तन मन धन सब हारी हो नैन कटारी ॥ ३ ॥ सब अपने मन सोच करत हैं, केहिकी तुम बहुआरी। जेहिकी मैं नारी नाम नहिं जानत, सुन्यों जिन गजराज उबारी हो नैन कटारी ॥ ४ ॥

चौताल ४३.

भरि देहु गगरिया हमारी कहैं वृजनारी ॥ हमसे चढ़ो जात नहिं मोहन, जमुना ऊँच करारी। पांव धरत हमरो जिय लरजत, दूनो पायन पायल भारी कहैं वृजनारी ॥१॥ रसिक बैन सुनत यदुनन्दन, लै गागरि शिर धारी। बांह पकरि सखि संग चलत भये, जमुना तट आनन वारी कहैं

बृजनारी ॥ २ ॥ गागरि भरत करत रस बातैं, मदन रती अनुसारी। भरि भरि धरत सखिन शिर ऊपर, हँसि जोबन मलत विहारी कहैं बृजनारी ॥ ३ ॥ सब सकुचाइ रहीं बृजवनिता, प्रभुकी ओर निहारी। द्विज भागीरथि करत गुनावनि, कान्हा आज जुलुम करि डारी कहैं बृजनारी ॥४॥

चौताल ४४.

तनी आओ लाल मेरी गैल छैल जदुराई ॥ हे दिलदार तुमैं देखनको, अँखिया मोरि तरसाई। एक बार निशि दिवसके भीतर, तनि सूरति जाहु दिखाई छयल जदुराई ॥१॥ हम गरीब कछु लायक नाहीं, तुम पायो ठकुराई। एक बेर चितवो श्याम मेरे ऊपर, जासे हमहूँ तरन तर जाई छयल जदुराई ॥२॥ हम कुललाज बिसारि साँवरे, तुमसे नेह लगाई। सो अब कैसि करो हमरे संग, हम केहि विधि प्रान बुझाई छयल यदुराई ॥ ३ ॥ बैठि हैं द्वार मोहार आपने, चितै चितै पछिताई। भागीरथी मगमें खड़े मोहन, कर वंशी लिहे मुसकाई छयल जदुराई ॥ ४ ॥

चौताल ४५.

राधिका मग जोहत ठाढ़ी श्याम तहँ आये॥ खेलत हरि निकसे बृज खोरी कुंडल अधिक सोहायो। पीत पिछौरी तनपर ओढ़त, चक डोरीहू हाथ लगायो श्याम तहँ आयो ॥१॥ गै यमुनाके तीरे मोहन श्रीराधा मन लायो। औचक दृष्टि परी राधाजीकी, वोतौ सनमुख दरशन पायो श्याम तहँ आयो ॥२॥ नयन विशाल भाल दिहे रोरी, कामरूप

तन छायो। नीले वसन सखी तन सोहत, सखि विहँसत प्रेम बढ़ायो श्याम तहँ आयो ॥ ३ ॥ लगा महीना है फाल्गुनको, फगुआ सभै मचायो। राग औ रंग सभी कोइ साजत, सब देखि सूर मन भायो श्याम तहँ आयो ॥४॥

चौताल ४६.

राधिकाके नयन रतनारे काजर सोहैं कारे॥ बेंदी भाल चाल गजके सम, मोतियन मांग सँवारे। अँगिया अंग कसे कुच ऊपर, कान्हा नख शिख रूप निहारे काजर सोहैं कारे ॥१॥ अति आनन्द मगन मन गावत, बाजत आवैं नगारे। इत कान्हा सबको लखि ललचत, भरि रंग सखियन डारे काजर सोहैं कारे ॥२॥ रङ्ग परत सबकी सुधि भूली, विसरे घर और द्वारे। ना जानी फागुनऋतु आई हो, कीतो जादूको श्याम पसारे काजर सोहैं कारे ॥३॥ छनमें सुरति भई सखियनको, धै लीजै हरि प्यारे। धै हरि अंग रंग लपटावत, यह गति सूर विचारें काजर सोहैं कारे ॥४॥

चौताल ४७.

सखि कैसे कै रैन सिरात बिना बनवारी ॥ जैसे पिय पिय रटत पपीहा, वैसे हाल हमारी। सुरति सनेह लगी प्रीतमपर, मैं तो ढूँढ़त रसिकबिहारी विना बनवारी ॥१॥ सुन्दर वन घन सघन सोहाये, क्यों वन छिपे मुरारी। आरत वचनसों राधेजी टेरत, जसुमति सुत शरन तिहारी बिना बनवारी॥२॥ ग्वाल बाल संग रहस रच्यो है, देखत नैन पसारी। सोच करत कछु मनहिं न भावत, इहां देखो नहीं

गिरिधारी बिना बनवारी ॥३॥ मुरली शब्द सुनी राधाजी, प्रीति लगी अति भारी। द्विज हरिचरन शरन सतगुरुजीके, मोंसे बिरहा न जात सम्हारी विना बनवारी ॥ ४ ॥

चौताल ४८.

बन मुरली बजावत श्याम रहा नहिं जाई॥ लै लै नाम मुरलिमें सबको मिलो मिली धुनि लाई। सुनि बृजवनिता अपनी महलसे, सब चली हैं सो लाज गँवाई रहा नहिं जाई ॥१॥ शिरकी चुँदरी कमर पहिरे हैं, कमरकी शिरपै ओढ़ाई। अञ्जन नैनन बीच लगावत, शिर सेंदुर लेत लगाई रहा नहिं जाई ॥२॥ कोउ थन रही पियावत आपन, कोउ रही पलँग बिछाई। कोउ जेवनार बनावत भीतर, कोउ वसन विना उठि धाई रहा नहिं जाई॥३॥ कोउ गरिआवन लगी मुरलिको, जिन हमको बौराई। घरमें रहा नहिं जात महिपति, हरिकी मुरली तो है सुखदाई रहा नहिं जाई ॥४॥

चौताल ४९.

कान्हा देत मुसुकियन गारी धरे मेरी सारी ॥ तुमतौ ढोटा नन्द बबाके, मैं वृषभानु दुलारी। बेंचन आई पिताजीकी चोरी हो, सुनिपैहैं जाब घर मारी धरे मेरी सारी॥१॥ जाय कहों घर कंसराजाके, नई मति सौंचारी। कबहुँ न दाम लगे जमुना पर, तुम बीच करो ठगहारी धरे मेरी सारी ॥ २ ॥ कंसको मारि नई विध्वंस करों सखि, सुनिये हाल हमारी। हमतौ रारि करत जमुनापर, तुम देखहु नयन पसारी धरे मेरी सारी॥३॥ रङ्गभरी मदमत्त

ग्वालिनी, बोलो वचन सम्हारी। द्विज हरिचरन शरन सतगुरुजीकी, देके दान चली वृजनारी धरे मेरी सारी॥४॥

चौताल ५०.

सखि ऐसे निडर बनवारी गेंद गहि मारी॥ जब देखो तब खड़े रहत हम, चाहत काह तिहारी। वह दिनकी सुधि भूले हो मोहन, सब गोपिन मांग सँवारी गेंद गहि मारी॥ १ ॥ चंचल श्याम तुम्हैं हम जानत, छल करिहौ तुम भारी। लपकत बांह छांह नहिं पावत, नई नारि न जानौ गँवारी गेंद गहि मारी॥२॥ अतर गुलाबको रंग लिहे हैं, सोनेकी पिचकारी। बरबस रंग अंग पर मारत, मोरि भीज गई तनसारी गेंद गहि मारी॥३॥ वृंदावनकी कुंजगलीमें, जुटीं सकल बहुआरी। द्विज हरिचरन शरन सतगुरुजीके, सब गद सजैं वृजनारी गेंद गहि मारी ॥ ४ ॥

चौताल ५१.

तुम्हैं ढूँढ़त नन्दको लाल कहां रहिउ प्यारी ॥ ग्वाल सखा सब संग लिये सखि, ढूँढ़त कुंज विहारी। जमुना तट पर भेंट भई जब, सब सखियें सिंगार उतारी कहां रहिउ प्यारी॥१॥ भांति भांति रंग उड़ायो, रच्यो फागु बनवारी। हमरी ओर दया करि मोहन, मोरी भीजै हजारोंकी सारी कहां रहिउ प्यारी ॥२॥ जवा भरेकी चोली सोहै, रवा भरेकी सारी। लवँग भरेका लटकन सोहत, लहँगा बिच जरद किनारी कहां रहिउ प्यारी ॥३॥ वृन्दावन की कुंज गलिनमें रहस रच्यो गिरिधारी। सूरश्याम बलि आश

चरनके हो, मोहिं देत हजारन गारी कहां रहिउ प्यारी ॥४॥

चौताल ५२.

केकरे संग रैन बिताई भोर उठि आई ॥ उठे पलक अलसात नैन दोउ, रहे अरुनता छाई। अधर कपोल दशो द्युति दामिनि, तिनमें दृग अंजन लाई भोर उठि आई॥१॥ नखरेखा उँरमाहँ विराजे, देखु सखी कहँ पाई। हमसे कहत हरि भवनसे आवत, ललिताजी चीर चुराई भोर उठि आई ॥ २ ॥ सुमनमाल कर कामरि काँधे, मुरली अधर लगाई। नाचत गावत बेन बजावत, सब सखियनके मन भाई भोर उठि आई॥३॥ बहुविधि लीला कीन्ह श्यामजी, सुरन देखि हरषाई। सूरश्याम रसबश भइ ग्वालिनि, प्रभु हौ सखियन सुखदाई भोर उठि आई ॥ ४ ॥

चौताल ५३.

मोरि खेइ लगावहु पार नैया बनवारी ॥ सासु ननँद दधि बेचन पठयो, यमुना बहै मतवारी। घरसे हम कछु दाम न ल्याई हों. हम काह देबै घटवारी नैया बनवारी ॥१॥ हरि मांगत गजमुक्तन हरवा, अरु अम्बरकी सारी। दोउ जोबन छतियाकर मांगत, सखि देवैं तो पार उतारी नैया बनवारी॥२॥ दधि वो दूध बेंचि हम लौटब, सभै देब गिरिधारी। ना मानो गेंडुरी धरि राखो हो, प्रभु बीच करत ठगहारी नैया बनवारी ॥ ३ ॥ तुम कान्हा दृग नेह लगावत, लोग देत सब गारी। सूर श्याम बलि आस चरनतक, सब हरषि चलीं बृजनारी नैया बनवारी ॥४॥

चौताल ५४.

गर टूट गये मोती माला कहैं बृजबाला ॥ बरबश हाथ धरचो छतियापर, नन्द जशोमति बाला। लगत नखून खून बहि आवत, वे तो सकुचि रहे नन्दलाला कहैं बृजबाला ॥१॥ किहा सलाह ताल दै सखियें धै लावहु नँदलाला। नटवर नाच नचावत प्रभुजीको, तहँ आये हैं सब संग ग्वाला कहैं बृजबाला ॥२॥ वोरहन देन चलौ बृजवनिता, केकर बार दुलारा। जाय जनैहौं कंस रजाको हो, वै तो बन बन फिरत बेहाला कहैं बृजबाला ॥३॥ चंचल चतुर छोट वै बालक, श्यामरूप मतवाला। सूरश्याम कुंजनबिच विहरत, जाको नाम है कृष्ण गोपाला कहैं बृजबाला ॥४॥

चौताल ५५.

अंगिया मेरी आजु बिगारी छैल गिरिधारी ॥ जमुना तीर नीर भरनेको, साजि गईं बृजनारी। गागरि भरत धरत शिर ऊपर, तहँ पहुँचि गयो बनवारी छैल गिरिधारी ॥१॥ काहूकी गगरी धै फोरत, काहूकी चोली फारी। यह कौतुक देखत बृजनागरि, सब देत निलज होइ गारी छैल गिरिधारी ॥ २ ॥ इकतौ छोट खोट लाखनमें, ढोटनकी अधिकारी। करत कलोल बीच सखियनके हो, शिर गागरि लेत उतारी छैल गिरिधारी॥३॥ सबके मनमें बसत साँवरो, तनिक न जात बिसारी। सूरश्यामसे अरज करत सब, प्रभु निशिदिन शरन तिहारी छैल गिरिधारी ॥ ४ ॥

चौताल ५६.

सखि नैहर सबही भुलाना हो सासुर जाना ॥ नैहरकी

सुधि भूलि गई है, सासुरके अभिमाना। माया मीत घेरि सब ठाढ़े हो, मोहिं लागत कामको बाना हो सासुर जाना ॥१॥ काम क्रोध जग छाइ रह्यो है, माया मद अपमाना। सत्य औ सत्यनाम है सांचा हो, यह वेद पुरान बखाना हो सासुर जाना ॥२॥ कोउ कोउ सखी चली सासुरको पिया वचन मनमाना। पिय सँग सोवों पिया सँग जागों हो, तिरबेनी करों असनाना हो सासुर जाना ॥ ३ ॥ दास नरायन ब्रह्मपरायन, समरथ चरन लुभाना। द्विज हरिचरन शरन सतगुरुजीके, देखो अंतकाल पछिताना हो सासुर जाना ॥ ४ ॥

चौताल ५७.

अब करिहों मैं कवन बहाना गवन नियराना॥ सखियन संग महलि भइ चूनरि, हमको पिय घर जाना। आपु चतुर पिय मैं निरगुनियाँ हो, तेहिसे जियरा अकुलाना गवन नियराना॥१॥ सखियन संग गुण एको न सीखेउँ, औगुन घटहिं समाना। कैसे कहों पिय हियमें लगावो मन समुझि समुझि पछिताना गवन नियराना॥२॥ भीतर सखियें मोहिं सँवारैं, बाहर साजैं निशाना। द्वारे खड़े अनवार पियाकै हो, हमको तो वै करत बेगाना गवन नियराना॥३॥ धरि बहियाँ डोलिया बैठायो, पियघर कीन्ह पयाना। भागीरथी सब सोच दूरि करु, पद सेवहु श्रीभगवाना गवन नियराना॥ ४ ॥

चौताल ५८.

सखि पिय लखि रहत मलीना जोबन रस भीना॥

अन्न विना जैसे प्रान दुखित हैं, जल विनु तलफैं मीना। छोटे छेलकी नारि दुखित भई, वैतो दिन दिन रहत मलीना जोबन रस भीना ॥ १॥ ए विधिना तोर काहु विगारेउँ, छोट पुरुष मोहिं दीन्हा। अंग सिंगार एको नहिं सोहत, विनु प्रीतम सब रस हीना जोबन रस भीना ॥२॥ छोटेसे बड़ होइ हैं सोहागिनि, जो मन राखो अधीना। चोलीको बन्द जो तड़पन लागे हो, छोटा पिय मोरा पोछै पसीना जोबन रस भीना ॥३॥ करि असनान ध्यान धरि पियको सुरुज अर्घ तहँ दीना। सूर श्याम पिय भये सब लायक, मैं तो सेवा सभी विधि कीन्हा जोबन रस भीना ॥ ४ ॥

चौताल ५९.

गोरि नैनन काजर दीना प्रान हरि लीना॥ छैल छबीली रंगरँगीली बेसर सोहै नगीना। रंग वसंती चीरा सोहत, तेरे जोबनमें रस भीना प्रान हरि लीना ॥१॥ चतुरि सयानि शील गुन आगरि, नागरि बड़ी प्रबीना। विहँसत वदन कामरस बेधत, सेजियातर घायल कीना प्रान हरि लीना ॥२॥ सखी सयानी मन मुसकानी; ओठवन चुंबै पसीना। हिलमिल धूम मची सेजियापर, वे तो होइ गइ पियके अधीना प्रान हर लीना॥३॥ कामिनिको पिय धै झकझोरै, जस व्याकुल है मीना। द्विज हरिचरन दोउ कर जोरत, पिया तुमसे मैं सब विधि हीना प्राण हरि लीना ॥ ४ ॥

चौताल ६०.

गजगामिनि सेज बिछावे पियाको पौढ़ावे ॥ तोसक

पलँगपास लै कामिनि, तापर झारि दसावै। तकिया तीन तरफ मखमलकी हो, तापै अतर आनि छिरकावै पियाको पौढ़ावै ॥ १॥ धीरेसे पांव धरो पलँगापर, पांवजेब ठहनावै। पियाको पैर मलत सेजिया पर सखि नैनासे नैना मिलावै पियाको पौढ़ावै ॥२॥ खैर सोपारी लवँग अरु लाची, रचि रचि बीरा लगावै। चूमत अधर सुधासम लागत, वे तो हँसि हँसि बिरवा खिआवै पियाको पौढ़ावै ॥ ३॥ षोडश कला रूप करि भामिनि, पियाको जिय ललचावै। द्विज हरिचरन सखी रसबश भई, सखि खोलि खोलि वदन देखावै पियाको पौढ़ावै ॥ ४ ॥

चौताल ६१.

सैयां धीरेसे बहियाँ गहो रे बेसरिया न हालै ॥ रतन जननसे बनी बेसरिया, तामें हीरा लालै। यार सोनार प्रेम रस गूंजति, जामें मोती लगी मतवाले बेसरिया न हालै ॥ १ ॥ यह बेसरिकी गूँज नई है, चितवत करत बेहालै। नैनोंकी कोर जोरसे लागत, गड़ि जात करेजवामें भालै बेसरिया न हालै ॥२॥ नटनागरि आगरि अति चातुरि, गर कंचनकी मालै। बिरियाकी छबि कहां लगि बरनों हो, उतो चूमत है दूनौ गालै बेसरिया न हालै॥३॥ बरजि कहों बरजौ नहिं मानै, परी छैलके पालै। द्विज हरिचरन फंसे बिच नैनन, जैसे मीन फंसे बिच जालै बेसरिया न हालै॥४॥

चौताल ६२.

एक सुन्दरि नारि सलोनी खड़ी मग जोहै॥ घुंघुट घमंड

चन्द्रसम शोभित, अरुन किनारी लगो है। श्रवन बीच बिरिया दोउ झूलत, वाके झूमकसे जग मोहे खड़ी मग जोहै ॥१॥ मोतिनहार हमेल जोबन बिच, फुलरा रेशमको है। कठिन चोट अँगिया बिच लागत, माथे बेंदी झलक भल सोहै खड़ी मग जोहै ॥२॥ जुवती बनिता बनि आई हैं, वरसाने की खोहै। नोकदार कजरा बड़ झलकत, वाके कंठामें हीरा जड़ो है खड़ी मग जोहै ॥३॥ रसकी भरी निरस नहिं जानै, रसमें ध्यान परो है। द्विज हरिचरन शरन पियके वश, कोऊ कामसे नाहिं बचो है खड़ी मग जोहै॥४॥

चौताल ६३.

एक शशिवदनी मृगनैनी पियासे हँसि बोलै॥ सुन्दरि गोरी रसीले नैना, काम भरी तहँ डोलै। साज्यो सिंगार अभूषन द्वादश, सब रूप बने अनमोलै पियासे हँसि बोलै ॥१॥ प्रथम आगमन ढिग सिजियाके, चोलीको धै खोलै। लहर लहर लहँगा पट छोरत, हँसि हँसि करत कलोलै पियासे हँसि बोलै॥२॥ धै बहियाँ प्रेमातुर कुच गहि, चूमत अधर कपोलै। चूमन खंडन ठौर ठौर लखि, लिखि वेद बजावत ढोलै पियासे हँसि बोलै॥३॥ आसनसहित काम रस खेलत, त्रिपित बाम तन भोलै। द्विज हरिचरन रसिक रस विहरत, जैसे बालक करत ठठोलै पियासे हँसि बोलै॥४॥

चौताल ६४.

एक तिरछी ह्वै नारि निहारै नैन गहि मारे॥ सेन समै सखि जाइ सेजपर, प्रेमसहित ललकारै॥ पिय पिय कहत

रहत गृह भीतर, मोर काम अनल तन जारै नैन गहि मारै ॥ १ ॥ जैसे सखीको रही लालसा, दियो छैल करतारै। धैं कुच लचत गचत कँगना गहि, वैतो अंग अंग रस झारै नैन गहि मारै॥२॥ काम वामको खलित भयो तब, खुल्यो नैन रतनारै। पिया भग्रु भोग जोग सम कीनो हो, जैसे निम्बू तोरि रस गारे नैन गहि मारै ॥ ३ ॥ ऐसी सखीको लखी नैन भरि, भग्रु अंकुस गोंहडारै। द्विज हरिचरन सुखी भई कामिनि, वह छैला पांव नहीं टारैं नैन गहि मारै ॥ ४॥

चौताल ६५.

एक लचकत आवत नारि काम छबि घेरे ॥ बढ़े अनंग रंग तन छायो; कामकला बहुतेरे। कटि पातरि रसमातलि नागरि, वाकी ढिपुनी ललित कुचकेरे काम छबि घेरे॥१॥ भई कोलाहल शोर करत है, पिया पिया कहि टेरे। जोबन जोर मोर सम फिरकत, सखी दीपक ले घर हेरे काम छबि घेरे ॥ २ ॥ बालापनकी खेल भूलि गइ, पिया कुच पर कर फेरे। करख बोलि पिय हरष बढ़ावत, सखि परि गइ पियाके दरेरे काम छबि घेरे॥३॥ परी सखी मोहनी जाल ज्यों, चिड़िया फँसै वसेरे ॥ द्विज हरिचरन शरण मोहि राखो हो, तुम हियमें वसो पिय मेरे काम छबि घेरे ॥४॥

चौताल ६६.

एक नारि विरोग कि मारी हो पंथ निहारी ॥ छन अकुलात सेज छन आँगन, छन चढ़ि जात अटारी। बिहबल होइ घूमत है भामिनि, तनकी सुधि नाहीं सम्हारी हो पंथ

निहारी ॥१॥ पिया पिया कहि धावैं भवनमें, कोकिलकी अनुहारी। व्याकुल नारि परी विरहावस, भरि आये नैन दोउ वारी हो पन्थ निहारी ॥ २ ॥ वेदी बेसरि करनफूल सखि, भूषन वसन उतारी। ऐ सखि कंत विना धिक जीवन, यह फागुन है दुख भारी हो पन्थ निहारी ॥ ३ ॥ जो पीतम मोहिं आनि मिलावै, ता सम को हितकारी। द्विज हरिचरन शरन सतगुरुजीके, मोहिं काम अनल तन जारी हो पन्थ निहारी ॥ ४ ॥

चौताल ६७.

कैसे बीतै सैयां बिनु रैन भयो दुख भारी। कबहुँ ना किहेउँ पिया संग बतियां, न भरि नयन निहारी। नाहक ब्याह कियो पिय हमरा हो, बरु नैहर रहिति कुँआरी भयो दुख भारी ॥ १ ॥ बारी उमिरि पिया मेरी बितायो, का तकसीर हमारी। बारे सैयां तुमैं अस नहिं चाहत, मोहिं झलकी देखाईके सिधारी भयो दुख भारी ॥ २ ॥ गोली बन्दूककि मार सहों बरु, घाव सहों तरवारी। बिरहीकी बोलिया करेजवामें सालत, मोहिं लागत काम कटारी भयो दुख भारी ॥३॥ पियके हियमें दरद न आवै, मेरी सुरत बिसारी। द्विज हरिचरन निठुर पिय ढूँढ़त, सखि धीर धरो दिन चारी भयो दुख भारी ॥ ४ ॥

चौताल ६८.

जैसे भौंरा गुंजैं वंशपोढ वैसे धन रोवै॥ जेहि नारीको कंत बिछोहिल, वै कैसे सुख सोवै। सेज बन्दनपर नींद न

आवत, सब अंग अभूषन खोवै वैसे धन रोवै ॥ १ ॥ आधिराति सुधि आई पियाकी, सेजरिया उठि टोवै। दीपक बारि मन्दिर बिच ढूँढ़त, वाके अंतरसे दुख होवै वैसे धन रोवै ॥ २ ॥ बिहरै करेज जबै सखियाको, नैनन नीर निचोवै। अपना विरोग मैं कैसे कहों सखी, जैसे गंगा निर्मल जल धोवै वैसे धन रोवै ॥ ३ ॥ सती सयानि बैठि पलँगापर, कामदेवको गोवै। द्विज हरिचरन शरन सतगुरुजीके, वै तो बैठि पियाजीको जोवै वैसे धन रोवै ॥ ४ ॥

चौताल ६९.

पपिहा पिय पिय कहि गावै नींद नहिं आवै ॥ पपिहा बैन सुन्यो जब कामिनि, सेज रहा नहिं जावै। वैरी पपिहा कहा नहिं मानत, वह पियकी सुरति करावै नींद नहिं आवै ॥ १ ॥ तुरत उठी अकुलाय सेजसे, पिया पिया कहि धावै। भूषण वसन अंगपर सोहत, विनु कंत एको नहिं भावै नींद नहिं आवै ॥ २ ॥ जोबन जोर मरोर करत हैं, तन बिच आगि उठावै। छनमें तन घायल करिडारत, वह छनहीमें प्रेम बढ़ावै नींद कैसे आवै ॥ ३ ॥ अहो नाथ फागुन ऋतु आई, दूना काम सतावै। रामशरन बिरहिनि रसके बश, शरनागत बैन सुनावै नींद कैसे आवै ॥ ४ ॥

चौताल ७०.

सखि आये न कंत हमार तौ फागुन आयो ॥ फूलि रही बन चम्प केतुकी, भौंरजूहू जुरी धायो ॥ कोकिल कुहुक बान सम लागत, पपिहा पिया पिया रट लायो

तौ फागुन आयो ॥१॥ जबसे गयो मोरि सुधि नहिं लीन्यो, विरह ज्वाल उर छायो। दिन नहिं चैन राति नहिं सोवत, पिय कैसे दिवस बितायो तौ फागुन आयो॥ २ ॥ नित उठि पंथ पिया तोरी जोहत, उमिरि मोरि तरसायो। हे पिया तुमहिं दरद नहिं आवत, एक पाति उ नाहिं पठायो तौ फागुन आयो॥३॥ काह कहों कुछ कहि नहिं आवत, जोबन जोर जनायो। द्विज हरिचरन पिया पद सुमिरत, पिय हिय कै सोच मिटायो तौ फागुन आयो ॥ ४ ॥

चौताल ७१.

घर हमसे रहा नहिं जाइ हो सँवलिया प्यारे॥ कितो पिया आपने संग लै चलु, को घर रहौ हमारे। अब तो लाज छूटि गई तनसे हो, मोहिं लोग सिखै सब हारे सँवलिया प्यारे ॥ १ ॥ जबसे प्रीति लगी पिय तोहँसे, हम कुललाज बिसारे। नैन हमार तोहै विनु देखे हो, नहिं मानत सांझ सकारे सँवलिया प्यारे ॥ २ ॥ घरके लोग भये सब बैरी, सुनु पिय प्राण अधारे। तन मन अरपि दिया प्रभु तोहके हो, तुहसे तनिक बेर नहिं न्यारे सँवलिया प्यारे ॥ ३ ॥ त्रियके बचन मानि पिय लीनो, रहत सदा घरद्वारे। द्विज हरिचरन शरन सतगुरुजीके, सखि हँसि हँसि सेज सँवारे सँवलिया प्यारे ॥ ४ ॥

चौताल ७२.

चटकीली सुन्दरि नारि पिया मन भावै॥ गर पचलरिया अंगमें अँगिया, छतिया भौंर सोहावै। पावजेब पायन

अति सोहत, मग डोलत शोर मचावै पिया मन भावै ॥१॥ मोतिन मांग भरे अरु सेंदुर वेंदी झलक देखावै। बेसरिकी छबि कहां लगि वरनों हो, झुलनी मुख ऊपर धावै पिया मन भावै ॥ २ ॥ बाजूबंद दोऊ भुज सोहैं, अंगुरी सान बुझावै। सकल सुभाव कहांलगि वरनों हो, दूनो नैनासे नेह लगावै पिया मन भावै ॥ ३ ॥ आवत देखि पिया अपनेको, सेजिया पर बैठावै। द्विज हरिचरन शरन रसके वश, वै तो कामको बान चलावै पिया मन भावै ॥४॥

चौताल ७३.

चितवनि तेरी बांकी छबीली बान सम लागे॥ नैनोंकी बन्दूक बनी है, काजर रंजक लागे। पलक पलीता लखि लखि मारत, तेरी बोली ढुमाइके दागे बान सम लागे॥१॥ सेंदुरा धनुष बान इंगुराके, झूर तीर सम लागे। टिकुलीबान सम्हारके मारत, यह झलकत के मन जागे बान सम लागे ॥२॥ घूँघटकी पट ढाल बनी हैं, नथ झुलनी मुख लागे। नागफनी दोनों जोबन हालत, अचरा कर उठगन लागे बान सम लागे ॥ ३ ॥ विहँसत बदन बतीसी झलके, मुनिवर मन अनुरागे। द्विज हरिचरन शरण सतगुरुके हो, ऐसी कामिनिसे बचि भागे बान सम लागे ॥ ४ ॥

चौताल ७४.

चितवनि तेरी मारे कटारी नैन रतनारी॥ बसन अनेक अंगपर सोहैं, चोलीमें जोबन भारी। चाल चलत लचकत कटि नागरि, वै तो हँसि देत निहारी नैन रतनारी ॥१॥

भूषण सभे बहुत निक लागत, मोतिन मांग संवारी। चंचलि चतुरि नैन मटकावत, जेहि चितवत तेहि हति डारी नैन रतनारी॥२॥ नख सिख शोभा कहां लगि वरनों, मानो सांचकी ढारी। पुष्प सुवास सदा जिय चाहत, शुभ बोलत बैन बिचारी नैन रतनारी॥३॥ राग रंग मन वसत सखीको, भाव भक्ति अति प्यारी। द्विज भागीरथ करत बड़ाई हो, तनी चितवहु ओर हमारी नैन रतनारी ॥४॥

चौताल ७५.

नटनागरि ऐसी नबेली जोबन दूनौं भेली॥ किहे सिंगार विहार करत है, जहवां सकल सहेली। अतर सुगंध अंगपर सोहत, अरु लायो है तेल चमेली जोबन दूनौं भेली॥१॥ मुखमें पान नैनमें काजर, रूप बनी अलबेली। लचकत चलत हँसत लखि इत उत, मद मातलि नारि अकेली जोबन दूनौं भेली ॥२॥ शंख मारवरको बँगला हैं, तकि तकि ऊँचि हवेली। तेहि चढ़ि नारि पिया ललकारत, पिय आवहु तुम संग खेली जोबन दूनौं भेली॥३॥ रसवश भई सेजके ऊपर, खेलत ठेलाठेली। धै कुच लचत पिया मुख चूमत, रस शंकर देत ढकेली जोबन दूनौं भेली ॥४॥

चौताल ७६.

सैयां दूरिदेश मति जाहु कहों कर जोरी॥ रंग गुलाब अरगजा केशरि, भरि भरि मटुकी घोरी। चोली चीर चूदरी अपनी हो, पिय पाग एकै रंग बोरी कहों कर जोरी॥१॥ फागुन मस्त महीना पिया हो, धीर न जात धरोरी। घर

घर फागु मची पुर भीतर, खेलैं साज सजी सब गोरी कहों कर जोरी ॥२॥ मची धमारि उड़त रंग केसरि, गावत हैं सब होरी। बाजा विविधि भांतिके बाजत, मानो चहुँदिशि मेघ झकोरी कहों कर जोरी ॥३॥ सुनिके बानी पिया हँसि बोले, तोहसे न करबै चोरी। द्विज हरिचरन वचन पिय मानत, रस जोबन लेत हलोरी कहों कर जोरी ॥ ४ ॥

चौताल ७७.

दगा दीनो छैल आधीराति विदेश सिधारे॥ सोइ उठिउँ कतहुँ नहिं देखेउँ, नैन बहैं रतनारे। पिय तेरी सुरत तनिक नहीं बिसरत, मैं तो कोटि जतन कै कै हारे ॥ १ ॥ जैसे पपीहा बुन्द अगोरे, वैसे हाल हमारे। पिय पिय करत रैन नहिं बीतत, पिय हमरी सुरतिया बिसारे विदेश सिधारे ॥२॥ सोवत आजु सपन एक देखेउँ, पिय ठाढ़े हैं द्वारे। चकृत होइ कतहूँ नहिं देखत, मैं तो बोरी भई मन मारे विदेश सिधारे ॥ ३ ॥ कै कै सिंगार पलँगपर बैठी, मोतिन मांग सँवारे। द्विज हरिचरन शरन सतगुरुजीके, पिय निजुके गयो है सकारे विदेश सिधारे ॥ ४ ॥

चौताल ७८.

निरदैया है श्याम हमारो भेजै नहीं पाती॥ जबसे पिया परदेशमें छायो, एको खबरि न आती। आपु न आवै पिया पतिया न भेजत, मैं तो मुअलिउँ बिरह रस माती भेजै नहिं पाती॥१॥ सोवत रहेउँ सपन एक देखेउँ, आयो जन्म सँघाती। चौंकि उठेउँ कतहूँ नहिं देखत, मानो

उमड़ि आई मोरी छाती भेजे नहिं पाती ॥ २ ॥ नैहरकी सुधि भूल गई है, सासुरकी अहिवाती। पिय बिन सासुर नीक न लागत, मैं तो जियरा बुझावों केहि भांती भेजे नहिं पाती ॥ ३ ॥ धीरज होइ सुमिरत पियको जस, पपिहा बुन्द सवाती । सूरश्याम तोहि कहां लगि ढूँढ़त, मैं तो रटत रहेउँ दिन राती भेजे नहिं पाती ॥ ४ ॥

चौताल ७९.

गोरी मत करु बदन मलीन पिया तेरो आवै॥ छूटि गये नैननको काजर, सेंदुर विरह जनावै। परी है बिहोश होश नहिं तनमें हो, बिनु कंत बहुत दुख पावै पिया तेरो आवै ॥ १ ॥ बाजूबंद बिजायठ चाकी, तिलरी गले सोहावै। ई गहना नागिनि सम लागत, सखि बार बार पहिरावै पिया तेरो आवै ॥२॥ हरवा कोर करै छातीपर, बिनु पिय धूम मचावै। अधम निलज्ज लाज नहिं मानत, मोरे अंगसे पीर उठावै पिया तेरो आवै ॥३॥ जोबन जोर भये छतिया पर, चोलिया घाउ चलावै। द्विज हरिचरन पिया लखि जोहत, मोहिं एको सिंगार न भावै पिया तेरो आवै ॥ ४ ॥

चौताल ८०.

दिल फरकत है सखि मोर सजन आजु आवै॥ बोलत काग अंटा चढि कामिनि, आवन कंत जनावै। मन अति चैन नैन दोउ फरकत, मानो कंत भवन नगिचावै सजन आजु आवै ॥ १ ॥ सगुन उठाउ ननद आवनका, आजु कवन फल पावै। दाख बदाम और फल नरियर, गीरिया

थारके बीच धरावै सजन आजु आवै ॥ २ ॥ विप्र बोलाइ सगुन धन पूछत, मन अति हर्ष बढ़ावै । कटि किंकिनि अतलसकर लहँगा हो, गोरिया अंग सुगंध लगावै सजन आजु आवै ॥ ३ ॥ विविध अभूषण पहिरि त्रिया मुख, चन्द्र समान सोहावै । द्विज भागीरथि कहँ लगि बरनत, गोरिया रोम रोम मद छावै सजन आजु आवै ॥ ४ ॥

चौताल ८१.

गोरिया पियकर आवन जानी मनै हरषानी ॥ जेहि दिन सुन्यो पियाकर आवन, तन मनसे अकुलानी । घरसे आइ द्वार ठाढ़ी हो, गोरिया बोलत अमृतबानी मनै हरषानी ॥ १ ॥ कोउ सखि कहै सुनो हो कामिनि, क्यों ठाढ़ी बौरानी । आजु सहज हमरो घर आवत, मैं तो भरन जात गोरिया पानी मनै हरषानी ॥२॥ लै गागरि कुअनापर बैठी, चितै चितै मुसकानी । देख्यो पिया पिय पिय कहि टेरत, वै तो तन मनसे हुलसानी मनै हरषानी ॥३॥ आयो पिय द्वारपर ठाढ़ो, गोरि लखिकै ललचानी । द्विज भागीरथि हिय लपटावत, मोरि हिय बिच आगी बुतानी मनै हरषानी ॥४॥

चौताल ८२.

कैसे आवों पिया तेरी सेज शरम आवै ॥ पिय तेरे संग रैन भरि सोवत, पीर सही नहिं जावै । एक पहर पिय तोहरे संगमें हो, हमरे जिया यह भावै शरम मोरे आवै ॥१॥ कामिनिको पिय कहा न मानत, धै सेजिया पौढ़ावै । नख शिख तक जोबनरस लूटत, हियरामें लैकै छपटावै

शरम मोरे आवै ॥२॥ चूमत गाल कुचन कर फेरत, नैनन प्रेम लगावै। रसकी खेल करत संग कामिनि, दोउ हाथन तन सोहरावै शरम मोरे आवै ॥३॥ कर जोरे पियसे सखि बिनवै, छोड़ो बांह सुख पावै। द्विज भगीरथ रैन बीत गई, उठि कामिनि अति हरषावै शरम मोरे आवै ॥ ४ ॥

चौताल ८३.

पिय सेजरसे उठि जाहु रैन रही थोरी॥ सारी रैन मोहिं जागत बीत्यो, सैयां कमर नहिं छोरी। अरज करों बरजो नहिं मानत, मोरि धैके कमर झकझोरी रैन रही थोरी ॥ १ ॥ कच्ची कली मति तोरो हो बालम, जैहैं माल बिगरोरी। आवन दे मदमस्त हमारो हो, मैं तौ आपुसे चाह करोरी रैन रही थोरी ॥ २ ॥ भयो पसीना भिजी तनसारी, कमर छोड़ु पिय मोरी। भोर भये पिय खोलो केवरिया हो, मैं तौ पंछिन शब्द सुनो री रैन रही थोरी ॥ ३ ॥ ऐसो नशील कहा नहिं मानै, अरज करों कर जोरी। द्विज भागीरथ कर झकझोरत, मोरि नरमी कलैया मरोरी रैन रही थोरी ॥ ४ ॥

चौताल ८४.

पिय चाहत आपन काम दरद नहिं आई॥ अभी तो नारि नई गवनेकी, पिया खबरि नहिं पाई। लपकिकै बांह धरत सेजिया पर, पिय अबहीं उमरि लरिकाई दरद नहिं आई॥१॥ टूटे हार हजारकी माला, छतिया हाथ लगाई। नइ अबला रस भेद न जानत, पिय मुरकी है नरमी कलाई

दरद नहिं आई ॥२॥ सेज गये कछु अरज हमारी हो, पिय नाहँक मोहि रिसाई दरद नहिं आई ॥३॥ दोउ पायन घूँघुर झनकारैं, बिछुवा शोर सुनाई। द्विज हरिचरन रसिक रस खेलत, मैं तो तन मन बहुत लजाई दरद नहिं आई ॥४॥

चौताल ८५.

मन मारे अँगनवामें ठाढ़ी, रसीली नारी॥ छोटे पियाकी नारि जवानी, लखि जरिमरत विचारी। गुनत सुनत कछु नीक न लागत, मनमें देत पिताजीको गारी रसीली नारी ॥१॥ छोटे पिया कब अइहैं सेजपर, सोउब गोड़ पसारी। पीर उठत मोरे बीच करेजे हो, दिन राति मरे बिन मारी रसीली नारी ॥२॥ जौन भांति नेहरमें बीता, वैसे बिता ससुरारी। कहन सुननको व्याह भयो सखी, मैं तो जानत अबहीं कुँआरी रसीली नारी ॥ ३ ॥ पिया अनारी शोचै मन प्यारी, काम महीपति जारी। केतना कहों जिय बूझत नाहीं हो, पिय ओर न जात निहारी रसीली नारी ॥४॥

चौताल ८६.

सखि नई गवनेकी नारी सेज नहिं आवै॥ पकरि सहेली चली महलमें, सेजपर बैठावै। नहिं नहिं करत पिया नहिं मानत, पगु पायल शोर मचावै सेज नहिं आवै ॥ १ ॥ जबसे गई सेजके ऊपर, आरत बैन सुनावै। उझकि उठी झहराय सेजसे हो, गहि अंचल दीप बुझावै सेज नहिं आवै॥२॥ ता छिन प्रीतम धाइ गही कर, अधर सो अधर मिलावै। करत बिहार पिया संग कामिनि, जैसे काम

साजि दल धावे सेज नहिं आवै ॥३॥ पायन बिछुवा शोर करत हैं, तासे लाज लजावै। द्विज हरिचरण शरन सतगुरुके हो, मोहिं काम कलोल न भावे सेज नहिं आवे ॥ ४ ॥

चौताल ८७.

पिया तुम तौ चल्यो परदेश उमरि मोरी बारी ॥ सासु ननद हमरे घर दारुनि, मैं पितु मातु दुलारी । तुम तौ पिया परदेश सिधारे हो, पिय हमको केहि ओर निहारी उमिरि मोरी बारी ॥ १ ॥ बेला चमेली अतरसे बासत, फुलवन सेज सँवारी । सूनी सेज नागिनि सम लागत, पिया नाहक सुरति बिसारी उमिरि मोरी बारी ॥२॥ कै कै सिंगार पलँगपर बैठी, नैनरूप दोउ बारी । कोमल अंक बांह बल तुमरे हो, पिया का तकसीर हमारी उमरि मोरी बारी ॥ ३ ॥ कंचन थार कपूरकी बाती, लै आरति भइ ठाढ़ी । द्विज हरिचरन शरन सतगुरुके हो, पिया निशि-दिन आश तुम्हारी उमिरि मोरी बारी ॥ ४ ॥

चौताल ८८.

एक ठाढ़ि बिरिछ तर नारी विरोगकी मारी ॥ की तोर सासु ससुर रिसियाने, घरसे दीन निकारी। की तोर सैयां दुर देशवामें छाये हो, की तौ काम अनल तन जारी विरोगकी मारी ॥ १ ॥ हे सखि वैरनी सासु ननद हैं, मैं तो दिननकी बारी । बिनु पिय कौन हरत दुख तनका, मोहिं छोड़ि विदेश सिधारी विरोगकी मारी ॥२॥ तब तो रहेउँ मैं बारी लरिकवा, अबतो जुवा हमारी। अंग अनंग

सतावन लागे हो, दोउ जोबन मारै कटारी विरोगकी मारी ॥ ३ ॥ सुनो सयानी अंतरजानी, पियवा सुरति विसारी। भागीरथी पिय बेगि मिलावत, मोरी हियकी तपनि निवारी विरोगकी मारी ॥ ४ ॥

चौताल ८९.

पिया छोड़ि दिहेउ सुधि मोरी सुनहु तुम गोरी॥ जैसे सवार सजै घोड़ाको, कसै बाग औ डोरी। वैसे नारि जोबन दोऊ पालत, वै तो मातु पिताकी चोरी सुनहुँ तुम गोरी॥१॥ जैसे सोनार गढ़ै सोनाको, रती रती सब जोरी। वैसे नारी कामरस जोगवत, वैतो अंग अंग धै तोरी सुनहु तुम गोरी ॥ २ ॥ जैसे नारि चली पानीको, झमकिके गागरि बोरी। अंचल भीतर जोबन हालत, जैसे मोर लड़ैं झकझोरी सुनहुँ तुम गोरी ॥३॥ दीपक बारि चढ़ी धौरा हर, मोतिन लर छोरी। द्विज हरिचरन शरन सतगुरुके हो, एक पातिउ नाहिं लिखो री सुनहुँ तुम गोरी ॥ ४ ॥

चौताल ९०.

पियवा दूरि देशमें छायो हो फागुन आयो॥ उड़ो भँवर तुम जाहु पिया लग, मेरी अरज समुझायो। का तकसीर भई पिय हमसे हो, एक पातिउ नाहिं पठायो हो फागुन आयो ॥१॥ दूजो सँदेश भेजि जब कामिनि, सोऊ सँदेश भुलायो। तुम परदेश दुखित भई कामिनि, कोरई गनि दिवस बितायो हो फागुन आयो ॥ २ ॥ सुनि भँवरा दौरा पियके लग, कामिनि खबरि सुनायो। लै पाती पिय हिय लपटावत,

हियरा बिच हरष बढ़ायो हो फागुन आयो॥३॥ तुरित सवार रेलके ऊपर, द्वारे डंका बजायो। भागीरथी सखिको दुख भागत, जब पियकर दरशन पायो हो फागुन आयो॥४॥

चौताल ९१.

सखि उमिरि मोरि लरिकाई करों चतुराई॥ बाजत सुन्यों ढोल मंजीरा, सोवत कंत जगाई। फागु खेलन हमहूँ पिय जाबै हो, सब सखियें मोहिं बोलाई करों चतुराई॥१॥ जो आज्ञा पावों पिय तोहरी, सजों सिंगार बनाई। लै आज्ञा साजत नख शिख तक, कर दरपन ले मुसकाई करों चतुराई॥२॥ करि सिंगार चली जहँ सखियें, तन मनहरष बढ़ाई। चित चंचल अंचल फहराने हो, जोबना दोउ धूम मचाई करों चतुराई॥३॥ आवत देखि सखी सब हरषीं, कै आदर बैठाई। भागीरथी मिलि फागु मचावत, सब रसवश ह्वै हरषाई करों चतुराई॥४॥

चौताल ९२.

जहँ रैन भई अँधियारी घटा लगी कारी॥ मास अषाढ़ नींद नहिं आवे, सावन सोहै न सारी। कामकलोल दहत उर अंतर, दूजे रैन भई अँधियारी घटा लागी कारी॥१॥ भादौं भवन सून बिनु प्रीतम, क्वार कुशलके पारी। कातिक अगहन पंथ निहारत, सखि गवन करे नर नारी घटा लागी कारी॥२॥ पूस माघ ठंढी रितु आई, जाड़ लगै मोहिं भारी। ठाढ़ जोबन छतियापर लोकत, सखि फागुन काम सम्हारी घटा लागी कारी॥३॥ चैत मास टेसू वन

फूली, वैशाखे सेज सँवारी। सूरश्याम पियको समुझावो हो, कैसे जेठकी तपनि निवारी घटा लागी कारी ॥ ४ ॥

चौताल ९३.

एक साल सदरबिच भारी हुकुम भयो जारी ॥ मास कुवार अठासीके संग, लिखि परवाना पसारी। नौ नौ रोज इजाजतिके संग, लिखी लम्बर सबकी दुआरी हुकुम भयो जारी ॥ १ ॥ भई किताब सदरसे जाहिर, नकशा खाने शुमारी। आंधर लूल बहिर अरु लंगर, तेहि रंगसे लिखहु विचारी हुकुम भयो जारी ॥२॥ कबहुँ न खाइँ नहाइँ जूनपर, कानोगोउ पटवारी। कबहुँ ना संजम लगन जूनपर, छूटि गई चटनी तरकारी हुकुम भयो जारी ॥३॥ बड़ी भीर भै शहर गांवमें, घर घर दीपक बारी। द्विज भागीरथि होइहै वही गति, जोइ करिहैं बांकेविहारी हुकुम भयो जारी ॥४॥

चौताल ९४.

अलबेली फिरै इक नारि मदनरस माती ॥ चंद्रबदन अबला अति सुन्दरि, चलीजात अठिलाती। खंजन नैन बैन कोकिलसम, पग्गु धरत धरनि मुसकाती मदनरस माती॥१॥ अतिशै कुशुम बरन तन सोहै, थोरी उमिरि देखाती। जाहि बिलोकत कोर दृगनकी हो, तेहि सुधि न रहै दिन राती मदनरस माती॥२॥ छूट केश परे छतियापर, नागिनिसी दरशाती। चौंकि उठे चोलिया बिन जोबन, अरु काम जगावत छाती मदनरस माती ॥ ३ ॥ अदभुत रूप दिहा विधना तेहि, देखि रती सकुचाती। द्विज दयाल बिन कहँ

लगि बरनों हो, शिर बेंदी सोहै बहुभांती मदनरस माती॥४॥

चौताल १५.

सखि कंत हमारो है छोट जोबन भयो भारी ॥ दोउ कर जोरे मैं पीव बोलावों, आवहु सेज हमारी। आवहु कंत डरहु जिनि हमसे हो, विधि कीन्हेउ ब्याह विचारी जोबन भयो भारी॥१॥ लाज संकोच सभै त्यागा, देहकी दशा बिसारी। कोटिन जतन किहेउँ पियके संग, नहिं चितवत निपट अनारी जोबन भयो भारी ॥ २ ॥ काह करों जिय मानत नहीं, जोबन मारै कटारी। नाहक ब्याह पिता मोर कीन्हे हो, वरु रहि जात्यों बारिकुँवारी जोबन भयो भारी ॥३॥ मन मलीन दृग सबको चितवत, पिय घटबीज पुकारी। द्विज दयाल पियकी करि सेवा हो, पिय निशि दिन चेरि तिहारी जोबन भयो भारी ॥ ४ ॥

चौताल १६.

तेरी तिरछी नजर मतवारी कतल करि डारी॥ साजि सिंगार अटापर बैठी, भूषण वषन सुधारी। एक कर दरपन एक कर अंजन, गोरी अंजनकोर सँवारी कतल करि डारी ॥१॥ खोलि दिहेउ करसे पट घूँघुट, चंद्रबदन उजियारी। सनमुख दृष्टि परी रसिकनकी हो, जैसे कदली परै तरवारी कतल करि डारी ॥२॥ कोउ बेहाल है परचो धरनि पर, तनकी दशा बिसारी। कोउ निहाल हरषित है तन मन, छबि लोचन लाभ निहारी कतल करि डारी॥३॥ घायल चले जात नरनागर, मनमें बहुत विचारी। द्विज दयाल धनि धनि इनकर पिया, जिन अंक भरे ऐसी नारी कतल करि डारी॥४॥

चौताल १७.

लै संग रँगीली सैन मैन मदहारी ॥ ललित रंगपर रंग रँगायो, साजि सिंगार कुमारी । अति विशाल लाली ओठन पर, शशिके सम सुन्दरी मैन मदहारी ॥१॥ पावजेब नूपुर पद राजित, घाँघर घेर सँवारी । चोली बन्द उरोज कसे दोउ, मनमाँह मनोरथ भारी मैन मदहारी ॥ २ ॥ कुसुमु कली बीचो बिच गूँथे, शिरपर सुन्दरि सारी । घूँघटमें झालरि कंचनकी हो, बाकी झलकनि मारै कटारी मैन मदहारी ॥ ३ ॥ यह सरूपसे ठाढि नागरी, करत मधुर किलकारी । द्विज दयाल रसके वश नागरि, रसियन सँग खेलै खेलारी मैन मदहारी ॥ ४ ॥

चौताल १८.

सखि नैनाको बान चलाइ कहां अब जाती ॥ नैन तिहारो लोहको सिगजा, कुच भाला सम छाती । आरिपास सब सखियें बिराजत, सब जोबनके रसमाती कहां अब जाती ॥१॥ गोरो शरीर सोना अस झलकत, पहिरे रनकी पाती । कदली वरन जांघ अति शोभित, वै तो सुन्दर रूप सोहाती कहां अब जाती ॥ २ ॥ साजि समाज संग सब लीनो, लखि जोबन ललचाती । इत रसियनकी भीर विराजत, सब ठाढ़े हैं एकहि भांती कहां अब जाती ॥३॥ धूम धमारि मची दोउ दलमें, भूलि गयो दिन राती । द्विज दयाल सब रंग बरसावत, को विहँसत कोउ मुसकाती कहां अब जाती ॥४॥

चौताल ९९

खेलै हो निज फागु धमारी जहां सब नारी॥ हो होकार पुकार करत सब, घर घर भई तयारी। के के सिंगार अभूषन बहु विधि, एकठौर भई बहु बारी जहां सब नारी ॥१॥ हरषि गांवकी गली चलीं सब, गावत राग विचारी। शैलसुता पति रिपुदल जीतन, मानो रतिरँग चारु सँवारी जहां सब नारी॥२॥ इतसे छैल रंग लै धाये, देत सखिन पर डारी। झूरि अबीर मलत कुच ऊपर, अरु देत देवावत गारी जहां सब नारी॥३॥ हँसि हरषाय उठीं सब कामिनी हो हो कहो करि ललकारी। भागीरथी छवि देखि मगन भयो, धनि फागुन है यह भारी जहां सब नारी ॥ ४ ॥

धमारि १.

मैं सुमिरों शारदा हो देवी, सब देवनकी मूला॥ आदि जोति विन्धाचल सुमिरों, काली चरन सम तूला ॥ १॥ अष्टभुजा अरु हींगुलाजको, जाको चढ़ै पान फूला॥ २॥ चौहरजा सुखदायक सुमिरो, शीतल चरन न भूला॥ ३॥ सर्वरूप महारानी चरनको, शरन गये कटै शूला ॥ ४ ॥

धमारि २.

धोखे जन्म सिराई, सुजन जन राम राम कहु भाई। राम राम कहु सोवत जागत, रामहिं कहि जुम्हआई॥१॥ जो संकट दुख तनपर होवै, कहत राम सुख पाई॥२॥ जो कछु काज करत हरि सुमिरै, सो कारज होइ जाई॥३॥ तुलसिदास निशिदिन हरि सुमिरयो, सुरपुर लिह्यो तकाई॥४॥

धमारि ३.

आवै न कोई काम राम बिनु लाख करो चतुराई ॥
खेती बनिज बैपार सभै कोइ निशि दिन ध्यान लगाई
॥१॥ ऐसे रामको कौन बिसारै, संकट होत सहाई ॥२॥
उनको गुन जानत कोउ नाहीं, शारद थाह न पाई ॥३॥
सब तजि राम नाम गुन गावत तुलसीदास बताई ॥४॥

धमारि ४.

अवधके राजा दनियाँ दशरथ लिहे रामको कनियाँ ॥
पायनमें घुँघुर अति सोहत, कटि सोहै करधनियाँ ॥१॥
पीताम्बरकी कछनी काछत, टोपी सोहै चौतनियाँ ॥२॥
कानन कुंडल गर कंठा मनि, बोलत अमृत बनियाँ ॥३॥
तुलसिदास लखि मुखकी शोभा, भौंहै चढ़ीं कमनियाँ ॥४॥

धमारि ५.

दोऊ कुँअर निहारि जानकी देखै चली फुलवारी ॥ राम
लखनको रूप निहारत, हँसि हँसि जनकदुलारी ॥१॥ राम
लखनके नैन रसीले, रसवश भई सब नारी ॥ २ ॥ सिय
लखि कंगनमें परछाहीं, पलक जात नहिं टारी ॥ ३ ॥
उनकी शोभा कहाँ लगि बरनों तुलसिदास बलिहारी ॥४॥

धमारि ६.

के यह धनुहाँ टारी जनक तेरे द्वारे भीर भई भारी ॥
परशुराम फरसा लै धायो, सभाबीच ललकारी ॥ १ ॥
जुटीं सभै रनिवास जनकपुर, भृगसुतकी दे गारी ॥ २ ॥
कोउ गरिआवै राजा जनकको, कोऊ राम महतारी ॥३॥
सुरमुनि देखैं श्यामली मूरति, तुलसिदास बलिहारी ॥४॥

धमारि ७.

रूप मोहनी दृग भाला सिया डारयो रामउर जय माला ॥ रामचन्द्र दूलह बनि आयौ, बन्यो लषण सहिबाला ॥ १ ॥ समधिनि माता जक्त कौशिला, समधी दशरथ महिपाला ॥ २ ॥ उभय ओर बहु बाजा बाजैं, धाइ सखी गजकी चाला ॥३॥ तुलसिदास उनकी शोभा लखि, धनि धनि दशरथके लाला ॥ ४ ॥

धमारि ८.

भींजै सखीको चीरा अवधमें होरी खेलैं रघुवीरा ॥ रामके फाँड़े ढोलक भल सोहै, लछिमन हाथे मँजीरा ॥१॥ भरत शत्रुहन लै पिचकारी, सीता घोरि रंग नीरा ॥ २ ॥ मची फागु दोउ दलके बीचे, खेलत सरजू तीरा ॥३॥ तुलसिदास हुलसे प्रेमातुर, मोंहिं लागी चरनकी भीरा ॥ ४ ॥

धमारि ९.

रोकत नारी पराई जशोदा श्याम करैं लरिकाई ॥ बरबस उठे नन्दके ढोटा, ग्वाल सखा लै धाई ॥ १ ॥ सब कर लिहे कनक पिचकारी, छतियां पर देत चलाई ॥२॥ भीजि गई मोरि चूँदरि चोला, आप खड़ा मुसकाई ॥३॥ ओरहन देन चली तुमरे ढिग, बरजो कुँअर कन्हाई ॥ ४ ॥

धमारि १०.

जसुदा तेरो जायो महलपर डोरी डारि चढ़ि आयो ॥ चारि पहरके चारि सिपाही, एको मरम नहिं पायो ॥१॥ सोवत रहेउँ महलके ऊपर, कान्हा मोंहिं जगायो ॥ २ ॥

चौंकि उठेऊ नैनन भरि देखेउ, कुचपर हाथ चलायो ॥३॥ सूरश्याम रसमाते मोहन, प्रेमसहित मन भायो ॥ ४ ॥

धमारि ११.

पानी कैसे जाउँ रोकत श्याम डगरिया ॥ आवत जात राह मोरि रोकत, धै धै फोरै गगरिया ॥१॥ एक तौ छोट खोट लाखनमें, चितवत तिरछी नजरिया ॥ २ ॥ अरज करो बरजो नहिं मानत, निशि दिन करै रगरिया ॥ ३ ॥ सूरश्याम यह कला समुझिकै, आवों न याही नगरिया ॥४॥

धमारि १२.

तुम कोटि करो अपनी अपना ललचो मति लाल नया जोबना ॥ घाट बाट नित रोकत टोकत, लिहे संग दश बीस जना ॥१॥ सहि न जाति लखि भौंहँ मरोरनि, गोरि तोरि चितवनि प्रानहरना ॥ २ ॥ राह देहु तजि छाँह न पैहो, वह सम्पतिकी गति है सपना ॥ ३ ॥ शीतलदास त्रास नितकेरी, अब उचित नाहिं बृजको बसना ॥ ४ ॥

धमारि १३.

खेलैं बृज श्याम नई होरी ॥ इतते श्याम सखा सँग लीने, उत राधाके सँग गोरी ॥ १ ॥ इतते चलत गुलाल कुमकुमा, उतते अबीर भरे झोरी ॥२॥ राधा कर केशरिका कीचैं, श्याम हाथमें पिचकोरी ॥३॥ ठाढ़ होहु कित जाहु लाल रे, अब देखैं तुमरी बरजोरी ॥ ४ ॥

धमारि १४

फागुन बीता जाइ मोरी गुइयाँ आये मेरो सैयाँ ॥ आये

बसंत कंत नहिं आये मैं तलफत कोकिल नैयाँ ॥ १ ॥
फागुन ऐसो महीना न कोई, मची फागु सब ठैयाँ ॥ २ ॥
वाही समै पिय आय तुलाने मैं लागेउँ पीयकी पैयाँ ॥ ३ ॥
साजि सिंगार पलंगपर बैठेउँ, पियवा खेलै बकैयाँ ॥ ४ ॥

धमारि १५.

तलफै जीव हमारा जोबन पर कवने मोहनी डारा ॥
जोबन जोर कटीली चोली, कोउ चतुर खेलारी निहारा ॥ १ ॥
नैनकी जादू गड़ी जोबन पर, चीन्है आपन यारा ॥ २ ॥
जहाँ मरदकी भीर बहुत है, उहवाँ नाहिं गुजारा ॥ ३ ॥ कोउ गुनियाँ जादु यह जादूको झारै एक चंचल छैल उतारा ॥ ४ ॥

धमारि १६.

बेसर गूजा नवै न जेठानी कोटि जतन हम कीना ॥ सुघर सोनार बनायो बेसरि, तामें लगायो नगीना ॥ १ ॥ नई नारि हारी बेसरिसे, ओठन चुवै पसीना ॥ २ ॥ कोउ रसिया बेसरि पहिरावे, प्रेमसहित रस भीना ॥ ३ ॥ जिसकी ब्याही तेही पहिरायो, जन्म सुफल करि दीना ॥ ४ ॥

धमारि १७.

मोहिं विरहा अधिक सतावत हो वारे कैसे भरों जल सावन ॥ बहै पुरवैया बिरह सम लागे, बदरा उठै भयावन ॥ १ ॥ झिमिकि झिमिकि दैवा वरसन लागे, मोरवा बोलै सोहावन ॥ २ ॥ चुनि कलिया सेज बिछायों, सुन्यों पियाकर आवन ॥ ३ ॥ आयो पिया हिया लपटायो, प्रेमसहित मनभावन ॥ ४ ॥

धमारि १८.

यह सूरतकी बलि जाही पिया जोबन मोरे बसमें नाहीं। दोउ जोबन चोलिया बिच हालत, सबै देख ललचाहीं॥ १॥ अधर कपोल नैनकी सूरति, लोग लखत परछाहीं ॥ २॥ जोबनको गहँकी बहुतेरे, पिय तुमरे हाथ बिकाहीं ॥ ३॥

धमारि १९.

नैना बने दरपनियाँ गोरि तोरी तिरछी रहे चितवनियाँ। बिहँसत बदन बतीसी झलकै. नाकमें सोहै नथुनियाँ ॥ १॥ कटि सोहै अतलसको लहँगा शिर सोहै लालि ओढ़नियाँ ॥२॥ बीच भाल एक बेदी सोहै, पायन पैजनियाँ ॥३॥ रूप मनोहर कहँ लगि बरनौं, सुभग सयानी धनियाँ ॥४॥

धमारि २०.

तेरी सूरति जैसे नगिनवाँ हो पिया ऐहो तूँ कौने महिनवाँ ॥ चारि महीनाकी वर्षा होत है, बिजुली तड़पै अंगनवाँ ॥ १ ॥ चारि महीनाके जाड़ा परत है, थर थर काँपै जोबनवाँ ॥ २ ॥ चारि महिनाकी गरमी होत है, मोरि चोलिया भीजै पसीनवाँ ॥ ३ ॥ मस्तराम पियको समझावो, पिय नाहँक लायो गवनवाँ ॥ ४ ॥

धमारि २१.

ऐसी प्रेमकी प्यारी गोरी तोरि चितवनि मारै कटारी ॥ पाटी पारै माँग सँवारै, सब सजिकै चढ़ी अटारी ॥ १ ॥ नैनन काजर मुखमें बीरा, चोलीमें जोबन भारी ॥ २ ॥ अंग अभूषन सजे सुन्दरी, ओढ़े कुसुम रंग सारी ॥ ३ ॥

ऐसी मोहनी रूप बनी है, ललचैं छैल निहारी ॥ ४ ॥

धमारि २२.

मन मारे अटापर क्यों ठाढ़ी तोरि चोलीमें जोबन हैं भारी ॥ नान्हें पिया परदेश निकरिगे, दियो सासु लाखन गारी ॥ १ ॥ कटि सोहै अतलसको लहँगा, शिर सोहै कुसुम रंग सारी ॥ २ ॥ मुखमें पान नैनबिच काजर, मांगमें सेंदुर लै डारी ॥ ३ ॥ वाही दिन आये मन मोहन, लियो दोऊ कर अंकवारी ॥ ४ ॥

धमारि २३.

पिय आजु बाईं भुजा मोरि फरकै॥ बारी उमिरि नैहरमें बीती, अब चोलीमें जोबन करकै ॥१॥ आपु पिया परदेशमें छायो, मोर ठाढ़ जोबनवां लरकै ॥२॥ जोहत रहेउँ पिया मोर आये, तुरित सेजरिया सरकै ॥३॥ धै झकझोरैं कमर नहिं छोड़ै, कर जोरे सखि हरकै ॥ ४ ॥

धमारि २४.

जहवाँ लागि अथाई निशिदिन सुरमुनि होउ सहाई ॥ सदा अनन्द रहै यह द्वारे, जहँ नर फगुवा गाई ॥ १ ॥ जिवैं गवैया अरु बजवैया, श्रोतनको सुखदाई ॥२॥ सब सुर आशिरवाद दिया है, अपनो धाम तकाई ॥ ३ ॥ गाइ बजाई उतारहु ढोलक, शैन करहु सब जाई ॥ ४ ॥

धमारि २५.

राम राम गोहरावैं, सुजन जन जो चाहैं सो पावैं॥ राम लक्ष्मण सीता, सो हैं तुलसीके मीता, निशि दिन राम

नाम रट लावैं, जहँ शरन के धावैं ॥ १ ॥ सब संतनका तारा, तब धै धै पछारा, वै तो देवन बन्दि छोड़ावैं, तब लौटि अयोध्या आवैं ॥२॥ उनके हनुमन्त पायक, सो सर्व गुननमें लायक, वै तो चरनन ध्यान लगावैं, सब मानुष ताहि मनावैं ॥ ३ ॥ कलिमें नाम अधारा, सो जोग किहे नहिं पारा, वै तो संकट सभे हटावैं जीवनके मन भावैं ॥४॥

धमारि २६.

सब मटुकी भरि भरि ठाढ़ी दहीले बेंचे चली वृजनारी॥ बृन्दावन है भारी, तहँ जुटीं नग्रकी ग्वारी, कोउ पहिरे पिताम्बर सारी, कोउ अँगिया बिच जरद किनारी ॥१॥ दोउ पायन पायल बाजे, कँगना दोउ हाथ विराजे, बेसरि पहिरे नाक बिच भारी, तहँ मोतीहार गर डारी ॥२॥ तब ग्वाल सखा ललकारी, जहँ ठाढ़ हँसैं बनवारी। लैलै एक एक पिचकारी, सब जोबन लखि लखि मारी ॥ ३ ॥ इत नागरि सब बारी, तहँ देत हजारन गारी। कान्हा चोलिया मोरि फारी, तहँ सूरदास बलिहारी ॥ ४ ॥

धमारि २७.

सुरति हमारि बिसारो सखी मधुवनमें श्याम हमारो ॥ झुकि झुकि गावैं मुरली बजावैं, ग्वालिनी सभै रिझावैं, हँसि मुसकात श्यामली मूरती नैन कोर मतवारो ॥ १ ॥ ढूँढ़त फिरैं सकल वृजबाला, काली नदीके किनारो, उहां कान्हके छोरे खेलत, छिपे श्याम ठगहारो ॥२॥ निरखत रही राधिका नागर, श्याम तहां ललकारो, रूप देखि

मोहित सब सखियें मंत्र मोहिनी डारो ॥ ३ ॥ एक तो राधे ऐसी सुन्दरि, मोतिन मांग सँवारो । श्याम नैनकी जादू लगी है, का करै सूर विचारो ॥ ४ ॥

धमारि २८.

सब सखियनके मन भावै सखी गोपाल गलीमें गावैं ॥ गावत बजावत उहां गये जहँ, सखियें फाग्गु मचावैं । घेर लियो है सब जुबतिनको, एको जात नाहिं पावैं ॥१॥ मची फाग्गु दोउ दलके बीचे, अतर गुलाल उड़ावैं । सराबोर सारी सखियनकी, भेइ भेइ दोहरावैं ॥ २ ॥ उतसे चलत अबीर कुमकुमा, इत पिचकारी चलावैं । खुशी भई बनिता लखि मोहन, हंसि हंसि हर्ष बढ़ावैं ॥ ३ ॥ तापर भोरै लिहेउ जदुनन्दन, रसकी बातैं सुनावैं । सूरश्यामको देखि नैनभरि, कामको जाल फंसावैं ॥ ४ ॥

धमारि २९.

जोगी अनल तन जारा संतो नदी बहै जलधारा ॥ पुरइनि पात जलहिमें उपजे, जलहिमें करे पसारा ॥ वाके पात पानि नहिं लागै, ढरकि परे जैसे पारा ॥ १ ॥ जैसे सती चढ़ी सत ऊपर, पिया वचन नहिं टारा ॥ आपु तरै औरनको तारै, तारै कुल परिवारा ॥ २ ॥ जैसे सूर चढ़ै लड़नेको, प्रेम मगन ललकारा । जाकी सुरति रही लड़नेको, धै धै शूर पछारा ॥ ३ ॥ भवसागर एक नदी बहत है, लख चौरासी करारा । संत रहे सो पार उतरिगे, निगुड़ा बुड़ैं मँझारा ॥ ४ ॥

धमारि ३०.

बड़े खेलारी मुरारी रे सखिया धै चोलिया मोरि फारी ॥ जहँ जुटीं सकल बहुआँरी, खेलैं फगुआ ललकारी। कोउ कोउ रंग लिहे भरि थारी, अरु अतर थार बिच डारी ॥१॥ लिहे सखा गिरिधारी, पहुँचे जहँवाँ सब नारी। वेतौ साज सजे अति भारी, सब कूदेउ गोल मझारी ॥२॥ चकृत हैं सब ग्वारी, कोऊ हैं बैस कोऊ हैं वारी। वे तो चितवैं नैन पसारी, सब हँसि हँसि देवैं गारी ॥ ३ ॥ ललकारयो सब प्यारी, धै लेहु आजु बनवारी। एतौ कठिन चोर ठगहारी, जोबनाबिच मारयो कटारी ॥ ४ ॥

धमारि ३१.

लैगयो चीर हमारी रे सखिया चंचल छैल मुरारी ॥ लैके चीर कदम चढ़ि बैठेउ, हम जल मांझ उघारी। श्याम बड़े रसिया हैं रसके, ठाढ़ी मैं ताहि पुकारी ॥१॥ तब हँसि बोले कदमके ऊपर, जलसे होउ तु न्यारी। चीर तुम्हार तबै हम देहों, वह लेहौं जोबन दोउ भारी ॥ २ ॥ पुरइन पात पहिरि मैं निकरेउँ, श्याम गहेउ अंकवारी। हाहा करों न मानत मोहन, जोबन दलिमलि डारी ॥३॥ हँसि हँसि कहैं आजु जदुनन्दन, सुनहु राधिका प्यारी। तोहरे नैन बैनके कारन; हम अपनो धाम बिसारी ॥ ४ ॥

धमारि ३२.

मोरे हियके तपनि बुझावैं ललिता कबहुँ श्याम घर आवैं ॥ जब लागे मास अषाढ़ा, तब चहूँ दिशा जल

बाढ़ा। मैं तो बूड़त मँझधारा, मोहिं पिय बिनु कौन उबारा ॥१॥ सावन मास तुलाने, सब सखी हिंडोला ठाने। सब तो झूलैं संग सहेली, मैं पिय बिनु झूलों अकेली॥२॥ भादों गगन गंभीरा, मोर नैन बहै जल नीरा। हमरे चिंता भई शरीरा, अब कैसे धरों जिय धीरा ॥३॥ क्वार मास दुख दूना, मोर पिया बिनु मंदिर सूना। मैं तो कासे कहों दुख रोई, मोहिं पिय बिनु पीरा होई ॥४॥ कातिक पक्ष उजियारा, तब पलक न लगै हमारा। मैं तो अंग विभूत लगावों, जो जोगिन होइ पिय पावों ॥५॥ अगहन और अनेसा, मैं लिखि भेजों सनेसा। पिय मोर एहू सनेस न आए, मोर पिय परदेशमां छाये॥६॥ पूस मास जब लागे, तब अधिक काम तन जागे। सबतौ सोवैं पिया सँग जाई, मोहि बिरहा अधिक सताई॥७॥ जब लागे मकर महीना, सब सजैं सिंगार प्रवीना। सब तिरवेनी करैं असनाना, मोर पिय चरन पर ध्याना ॥ ८ ॥ फागुनको फगुआ लीना, पिय मो कहा नहिं कीना। सब तौ खेलैं रंग झकोरी, मैं केहि संग खेलों होरी ॥ ९ ॥ चैत मास खरवांसा, पिय आवनकी मोहिं आसा। मैं तो पिय रहों मलीना, जैसे जल बिनु तलफै मीना ॥१०॥ जब लागे मास वैसाखा, पिय पर तन मन हम राखा। कागा बोलै अंटा ऊपर, पिय चले भयो दिन दूसर ॥११॥ जेठ आइ सुध लीनो, पिय द्वारे डंको दीनो। अपनी त्रियको दुख हरि लीनों, सब विधिसे खातिर कीनो ॥ १२ ॥

धमारि ३३.

मिले आजु हरषाई पिया मोहिं चूँदरी पहिराई ॥ खूँट पांच पचीसको ताना, तीन नरी विनवाई ॥ १ ॥ बूटज्ञान वैराग विविधि विधि, नामकी डोरी लगाई ॥ २ ॥ प्रेमको फूल उतारी मगनमन, अजब रंग बोरवाई ॥ ३ ॥ सो चुँदरी सखि सुखाय पहिरै, जगन्नाथ पिय पाई ॥ ४ ॥

धमारि ३४.

गुनकी आगरि रूपकी सुन्दरि, नैहर दाग परै मोरि चुँदरी ॥ तन मन लाइके सौतनि कीन्हेउँ, साबुन महँग बिकाइ यहि नगरी ॥ १ ॥ ब्रह्मा धोयो विशुनौ धोयो सतगुरु विना करै को उजरी ॥ २ ॥ पहिरि चूंदरी गई सासुरको, सासुर लोग कहैं सब फुहरी ॥ ३ ॥ कहै कबीर सुनो भाई साधो, विन सतसंग एको नहीं सुधरी ॥ ४ ॥

धमारि ३५.

अभी हम दूनौं कुल उजियारी ॥ सात खसम नैहरमें कीन्हेउँ,सोरह करि ससुरारी। सासु तुम्हारे माथेकी किरिया, अबही बारि कुँआरी ॥ १ ॥ पांच सात कोखीकर खायों, खायों एक दुइ चारी। रान्ह परोसिनि एको न छोड्यो, नैहरको पशुधारी ॥ २ ॥ सासु ससुरको लातन मारयों, जेठकै मोछ उखारी। सैयां हमारो सेज बिछावै, सूतौं गोड़ पसारी ॥ ३ ॥ कहैं कबीर सुनो भाई साधो, ये पद लेहु विचारी। जो यह पदको अर्थ लगावैं, सो वैकुण्ठ सिधारी ॥४॥ देखहु नैन पसारी, अभी हम दूनों कुल उजियारी॥

धमारि ३६.

कुमतिया दारुनि रोजे लड़े ॥ कौने अँतरे ढुकी रहत है टुपकि देइ जैसे बीछी चढ़े ॥ १ ॥ सारी अंग मतवारी करत है, जहँ मारे तहँ लोहा गड़े ॥ २ ॥ चाल चलै जैसे मैगरि हाथी, मारे मरै नहिं टारे टरै ॥ ३ ॥ कहैं कबीर सुनो भाई साधो, यह विष संतन झारे झरै ॥ ४ ॥ निशि दिन हमरे पाले परै हो, कुमतिया दारुनि रोज लरै ॥

बेलवारा १.

बृज करत बिहार श्याम राधिका दूनो जना ॥ आनँद सुरपुर बाजै, तबला धुधकार। कंकन कर कर बाजे, गठि बाजे सितार ॥ १ ॥ भरि भरि झोरि अबीरा, केशरि भरि थार। ऐसी कीच मचावैं, बृज होइ अँधियार ॥ २ ॥ बाजैं ढोल मँजीरा, औरो करतार, ता बिच नाचैं गोपिका, हरि ताहि मँझार ॥ ३ ॥ गोपी सभै मिलि गावैं, बृज होइ गुलजार, सूरश्याम हो स्वामी, अब लावहु पार ॥ ४ ॥

बेलवारा २.

चन्द्रवदन मृगलोचनी हो शोभा अति अंग अपार बहुत नीक लागै पातरी हो गोरी ॥ जैसे दुइज कर चांदवा हो, वैसे गोरी कर भाल, माथेको बेंदी का बरनो हो, इंगुरा मानो बरै मसाल ॥ १ ॥ करन फूल दोउ कानन सोहैं, टिकुली अति सोहै लिलार, नाकेकै बेसरि का वरनों हो, ओठवन झुलनी झोंपेदार ॥ २ ॥ कुसुम रंगकी सारी सोहै, कीन्हे नौ सात सिंगार; नागफनी दूनों जोबन ठाढ़े, झलकैं चोलियाके

मझार॥३॥ पांव पैंजनी अनवठ बिछुवा, घुँघुरू लावै अति शोर, सुगा जबानी बोलत है हो, नाचै जैसे वन मोर॥४॥

बेलवारा ३.

एक सुन्दरि नारि नगीना बनी जाकी भृकुटी छबि नैन विशाल, आश मोरे सैंयाकी लागि रही नहिं आयो॥ रोइ रोइ पाती लिख अलबेली, भेजै सुगनाको बुलाइ, मेरी अरज समुझाय कहेउ सब, छतियाँ रस गयो सुखाइ॥१॥ जैसे मुरैला शोर करत है, कोइल बोले आधी रात, बैठी पलँग पर नींद न आवै कामिनि बैठी पछिताइ॥२॥ जैसे कुईं कुम्हिलाइ गई है, वैसे गोरी वदन सुखाइ, कामको बान लगे छतिया पर हियके बीच सहा न जाइ॥ ३॥ ई पुरवैया जनमकै बैरिनी, अंचल मेरो उड़िजाइ लहुरा देवरवा मानत नाहीं देखे जोबन ललचाइ॥ ४॥

बेलवारा ४.

चंचल चपल नवल नटनागरि, अँगिया मुलतानी कामना, पुर्बीबान फिरै गलियांमें विरह भरी अलबेली पापी पपीहा रटै शिर ऊपर, पियकी सुधि देइ कराइ। तलफि तलफि मोरि अँगिया भीजै, जोबना दूनौं बौराइ॥१॥ पिय पिय करत मैं पीपरि भैलेउँ लोगवा जानै यह रोग वैदा अनारी मरम नहिं जानै, मुअलेउँ पियवा तेरी शोक॥२॥ जैसे भुजंगमकी मनि हरिगइ, जल बिनु तलफै जैसे मीन वैसे हाल भई गोरीकी, कउनौ जादू देइदीन॥३॥ आग लगै वह देशवां हो, जहवां पियवा गये मोर। दास दयाल आइगये रतियां, सेजिया रसबातें होइ॥ ४॥

बेलवारा ५.

छैल बतिया मति भूलो तेरे शरन मैं आवों वरिहाँ ॥ एकतौ पलँग मेरी छोटि रे वरिहाँ, दूजे निर्मलि रतिआँ जोरिया वरिहाँ, तेरी सेज पिया मैं न चढ़ो रे पयल मेरी बाजे ननद घर जागे, छोडु पिया बहियाँ मैं जावों ॥ १ ॥ गोरी रंग महल चढ़ि जाहि वरिहाँ गोरी पैठीहैं राम रसोइयाँ वरिहाँ, जब सुधि आवे बारे सैयाँकी बारे छैलकी केहि विधि पीव मनावों ॥ २ ॥ दिल्ली शहरकी अँगिया वरिहाँ बन्द लागे हजार हो वरिहाँ खोलै न जाने सैयां अनारी चोली हमारी, केहि विधि ताहि बतावों ॥ ३ ॥ सखि आवैं दोऊ कर जोरि रे वरिहाँ, दूजे सूरश्याम बलि जाहुँ हो वरिहाँ, चंचल चाल हाल बहुतेरी, अरज सुन मेरी, चरनन ध्यान लगावों ॥ ४ ॥

बेलवारा ६.

भला नये जोबन वाली पियसे अठिलानी वरिहां ॥ गोरी पांच मोहरकी बेंदिया वरिहां, दूजे दसै मोहरको हार हो वरिहां, कड़ा छड़ा घूँघुरके ऊपर पायल सोहै, शोभा न जात बखानी ॥ १ ॥ जाके टिकवा रसील माथ रे वरिहां, दूजे नैननमें छबि लागी रे वरिहां, हीरा मोती बेसरि सोहै, सब जग मोहै रसकी माती जवानी ॥ २ ॥ सुरख रंगकी चोलिया वरिहां, तामें जोबना रहै अनमोल रे वरिहां, सारी भरी कुसुम रंग सोहै बहुत मन मोहै, अतलस सुन्दर आनी ॥ ३ ॥ सैयां दूरिदेशा मति जाहु हो वरिहां

तोहै सूर कहै समुझाई हो वरिहां, दूरदेशकी खबरि न पावों तूहै बतावों, सुनो पिया मोरि बानी ॥ ४ ॥

बेलवारा ७.

भला पियवा हनि मार्‌यो बिरहाकी कटारी वरिहां ॥ बारीबैस घर आनिकै परदेश सिधारे वरिहां, भई तबते निसभारी सेजिया लागै कारी वरिहां ॥१॥ पिय पिय रटत पपीहा मोरवा धुनिकारि वरिहां, जरै बिरहाबस नारी प्रीतम बिनु प्यारी वरिहां ॥२॥ तुम तौ चल्यो परदेश उमरि मोरि बारी रे वरिहां, भला पिया चेरी तुम्हारी बियही तोरी नारि वरिहां ॥ ३ ॥ द्विज हरिचरन कहत करजोरी हो वरिहां, पिया तन मन हम हारी मैं तो शरन तिहारी वरिहां ॥४॥

बेलवारा ८.

भला परदेशी पिया हो कहवां तुम छायो वरिहां, मैं अबला कछु जानत नाहीं हो वरिहां, दूजे उमरि थोरी लरिकांई हो वरिहां तुम अंतरजामी जगकेइ स्वामी आपन रूप छिपायो॥१॥ वारी उमरि मोरी बीती हो वरिहां, अबतौ भै बैस जवानी हो वरिहां, जोबन जोर कठोर जनावै घटबिच काम सतायो ॥२॥ पिय तेरे चरनतक आस हो वरिहां, मैं तो भजत लाज सब छोड़ी हो वरिहां, निसदिन ध्यान पिया पर राखो, पिया सुरति मन भायो॥३॥ पूरन जन्म हमार हो वरिहां, मोको मिल्यो पिया हरषाय हो वरिहां, दासकी आश पूरी करके पिय अपने तन लपटायो ॥४॥

बेलवारा ९.

रहा कैसे जाइ मोरी गुइयां पियवा बिन देखे वरिहां, कोठरी ऊपर कोठरी वरिहां, तेहि चढ़ि पंथ निहारती वरिहां जाइ कहैं कोउ बारे सैंयांसे, पियसे कामति कहेउ गोसैयां ॥१॥ मैं तो बेहवस पियाकी सोच हो वरिहां, नित रीन्हत राम रसोइयां वरिहां, जब सुधि आवे बारे छैलकी धुवांके भेलसै रोवों ॥ २ ॥ पिय बार बार समझायो हो वरिहां, पिया दुलछि हमारी बात हो वरिहां, दूरि देश मत जाहु पिया हो लागों तिहारी पैइयाँ ॥३॥ आधी रातकी जून हो वरिहां, मोरे तनबिच काम सतायो हो वरिहां, सखि मेरो जोड़ा विछुरि गयो है रतिया गनों कोरैया ॥ ४ ॥

बेलवारा १०.

मोसे माँगै चन्द्र खिलौना कहवां मैं पावों वरिहां ॥ गरमै मांगे कलेवना वरिहां, कूदि परे छिति ऊपर तुम्हरे गोद न अइहों मैया, लैहों चन्द्र खिलौना कहवां मैं पावों वरिहां ॥१॥ दूध भात नहिं खात रे वरिहां, एतहत आवो तुम्हैं बतावों, बलदेवे न बतैहों मैया लैहों चन्द्र खिलौना कहवां मैं पावों वरिहां ॥२॥ पाती गिरि आकाशसे पवन उड़ायो हो वरिहाँ, चन्द्रहुसे अति निरमलि राधा नई दुलहिया लैहौं मैया लैहौं चन्द्र खिलौना कहवाँ मैं पावों वरिहाँ ॥३॥ ठुमकत आवे बेटवना वरिहाँ, सूरश्याम सब भयो बराती अबै बराते जैहौं मैया लैहौं चन्द्र खिलौना कहवाँ मैं पावौं वरिहाँ ॥ ४ ॥

भरताल १.

चलो पिया सोइ रही हो अँखिया अलसानी वरिहाँ ॥
लाली पलँगपर जरद बिछोना, तापर चादर तानी ॥ १ ॥
सेजके ऊपर सुगंध लगायो, छिरकि गंगकर पानी ॥ २ ॥
धीरेसे पाउँ धरो पलँग पर, जागत मोरि जेठानी ॥ ३ ॥
रलकी खेल करो हमरे सँग, पिय तोरे हाथ बिकानी ॥४॥

भरताल २.

भला सखियनके बीचे राधे अलबेली वरिहाँ ॥ सखि दश
आगे सखी दश पीछे, लचकत आवै अकेली ॥ १ ॥ कोउ सखि
लीन्हें पानकर बीरा, कोउ लीन्हें फूल चमेली ॥२॥ ताहि
समय प्रभु आनि मिल्यो तहँ, फागु साजि दोउ खेली ॥३॥
मची धमारि श्याम रसके वश, मोहित सकल सहेली ॥४॥

भरताल ३.

भला लचकत घर आवैं नागरि अति भोली वरिहाँ
छतियाँ जोबन जोर जनावौं, मसकत है पट चोली ॥१॥
फागुन मस्त महीना लग्यो है, बोलैं रसिक रस बोली ॥२॥
कोउ गावैं कोउ बाजा बजावैं, तहँ नारि नैन पट खोली ॥३॥
नैनको भाला लग्यो हिय भीतर, ऐसी नारि अनमोली ॥४॥

भरताल ४.

भला कर लैकै गगरिया कामिनि मुसकानी वरिहाँ ॥ नई
नागरिया नई लिजुरिया नई नारि भरै पानी ॥१॥ ठाढ़ी
भरै लिजुरी नहीं आटै, निहुरे भरत लजानी ॥ २ ॥ धीरे
चलै घर बालक रोवै, हउले चलत डेरानी ॥ ३ ॥ द्विज
हरिचरन ठाढ़ होइ देखत, मस्त नारि अठिलानी ॥ ४ ॥

भरताल ५.

छैल मेरी बाँह मरोरत तोरे दरद न आई वरिहाँ ॥ मैं रसकी गति जानत नाहीं, गयूँ सेजरिया धाई ॥१॥ हर्षि पिया मोहिं गोदमें लीनों, छतियाँ हाथ चलाई ॥ २ ॥ चोली हमारी फारि बिगारेउ, दोउ जोबनको मसकाई॥३॥ रसकी हाल सभैं मैं पायों, पिय हियमें गयों समाई॥४॥

बैसवारा १.

श्याम तोरी बाजै पैंजनियाँ हरिलीनो जसोमति रनियाँ॥ माता उनकी चाल चलावै चाल चलैं ठुनमुनियाँ। उतरिकै कान्हा खेलन लागे, टूटि गई करधनियाँ ॥ १ ॥ पायनमें पैंजनियाँ सोहै, कटि सोहै करधनियाँ। गले बीच कंठा अति सोहै, तिरछी रहै चितवनियाँ ॥ २ ॥ पीताम्बरकी कछनी काछे और सोहै किंकिनिया। माथेमें चन्दन अति शोभित, श्याम बड़े निर्गुनियां ॥ ३ ॥ हाथे मुरली काने कुंडल, टोपी सोहै चौतनियां। मुखसे अमृत बानी बोलत, मोहिं दीजै मातु तुम पनियां ॥ ४ ॥

बैसवारा २.

श्याम धरिदीजै अलबेला, जहँ लागे भूपकर मेला ॥ बन अरि वाके सीस बस हैं सुरसरि वाके गोद, अधर बिम्बके बिचवां झलके मुहफिलमें मरजाद ॥ १ ॥ जल अगाध औरेब पंथ हैं कडुवी वाकी बास, उरगे उरगे कामिनि आवै, चली पियाके पास ॥ २ ॥ हुक्का ऐसा मजलिसवाला राखे पंचकर मान, हाथे हाथे घूमि फिरत है,

जस गोकुलको कान्ह ॥३॥ गड़ गड़ गड़ गड़ हुक्का बोले पंच पियें मन लाय, अतर गुलालको रंग चलत है घूमै छैला अकेला ॥ ४ ॥

बैसवारा ३.

अरिये कन्हैया रँगि डारी मोरी सारी मैं ठाढ़ी विरहकी मारी॥ काहेकर तेरो रंग बनो है, काहेकी पिचकारी, कौनी गलीमें भूलि गये हैं, रँग डारा कौने खेलारी ॥१॥ अतर गुलालको रंग बनो है कंचनकी पिचकारी, कुंजगली में भूलि गये हैं रँग डारा कृष्ण खेलारी ॥ २ ॥ होई फागु मगबीच बिरजके, जुटि सकल बहु आँरी ओसरि ओसरि फागु खेलावैं, जेकरि जस है पारी ॥ ३ ॥ उत राधा इत ग्वाल सखा सब घेरि रहे बृजनारी, गाजा बाजा दोउ दिशि होवें, सूर पाँव नहिं टारी ॥ ४ ॥

बैसवारा ४.

अरिये अकेली पनिया न जैहौं संग लेहौं ननदको लाई॥ कुवना पानी मैं जो गई हौं कुवनामें काला नाग, काले नागसे मैं बचि आयो अपने पियाकी भाग ॥१॥ काला पनिया मैं न पियों रे, कालीमिरचि न खाउँ काले मर्दकी सेज न सूतों, मैं काली होइ जाउँ॥२॥ नारे नारे जाती रही हो, नारेकै चिकनी माटी, पाँव बिचलिगा घड़ा फूटिगा सासु कहैं बहु माती॥३॥ रसकी माती राहमें डोलैं, वचन कहै अठिलानी। लरिकाई कछु खेल न जानेउँ, अब तौ वैस जवानी ॥ ४ ॥

बैसवारा ५.

भला मेरेसे क्यों न लड़ी रे मैं ठाढ़ी कुञ्जगलीमें ॥ मैं जमुनाजल भरत जात रहेउँ सांकरि रही गली, बालक जानिके चाका दियो है तुम काहू न डरी ॥ १ ॥ चलो मातु मैं तुम्हें देखावों जहँ हमसे झगरी, सुन्दर बदन पीत पट ओढ़े, चितवत चपल खरी ॥२॥ तुम तरुनी गिरिधर मोरे बालक, तुम कस भुज पकड़ी । गिरधर रोवै भरि भरि अँसुवा, तुम मुसकात खड़ी ॥३॥ सूरदासको आस चरनकी, श्याम बड़े रगरी । निशिदिन मोसे रारि करत हैं बसों और नगरी ॥ ४ ॥

बैसवारा ६.

अरि ये हमारी अँतर भरी अँगिया तुम धोइ लाउ धोबी यार ॥ धोबीके धोबी घाटवां एक माली लगावा बाग, पहिल टिकोरा सुगना काटा चोलीमें परिगा दाग, ॥ १ ॥ वाही पारके धोबिया हो मेरे बुलाये चलि आउ तुमको दैहौं सोनकर टकवा चोलीको दाग छोड़ाउ ॥२॥ कहां तिहारी औननि सौननि कहां तिहारो घाट, कहांके पानी धोइ लिआयो आवै लवँगकी बास ॥ ३ ॥ गंगा हमारी औननि सौननि जमुना हमारो घाट, उहांके पनियां धोइ लिआयो आवै लवँगकी बास ॥ ४ ॥

लेज १.

श्रीकृष्णचरनकी बलिहारी ॥ माथे सो चन्दन अतर सुगन्धन जगबन्दन हैं बनवारी, टोपी शिर सोहै सब जग

मोहै मोहि रहीं बृजकी नारी, सूरति विशाल निरखत निहाल गोपाललालकी छबि न्यारी ॥१॥ कंठे बिच हीरा मुखमें बीरा अजब शरीरा गिरिधारी, गडवनके पाछे कछनी काछे आछे आवत करतारी, श्रीमोर मुकुट पीताम्बर सोहत तिरछी चितवनि अति प्यारी ॥ २ ॥ ऐसे प्रभु तनिया बड़े चिकनिया पायन घूँघुर झनकारी, मोतिनके माला वोढ़े दुशाला नँदलालकी छबि भारी, तेहि छन चढ़े कदमके ऊपर सब सखियनको दै गारी ॥ ३ ॥ कर सवा विलस्त बांसके मुरली तेहिमें छेद बन्यो चारी, जब ओठवनपर कहर कियो है मोहि रहीं बृजकी ग्वारी, रसकी खेल कियो बृज भीतर असुर अनेकनको मारी ॥ ४ ॥

लेज २.

गोपी गोपाल खेलैं होरी ॥ बाजत मृदंग मुरचंग जंग करतारन बाजत जोरी, घंटा घहराने कोटि नगारे एक तारे धुनि एक ठोरी, और मजीरा झांझ वीन डफ ढोलक तान अधिक तोरी ॥१॥ एकै बृजनारी ओढ़त सारी सूहारंगसों रंग बोरी, पायल पगु बाजैं नूपुर छाजैं कर मुँदरी पहिरे भोरी, उर बिच माला चंचलि चाला चितवत चित्त करै चोरी ॥ २ ॥ बेंदी शिर सोहै सब जग मोहै रूप सलोनी उमिरि थोरी, चन्दन मन्दन जमक जमाया केशरि औ गुलाल घोरी, कंचन पिचकारी हनि हनि मारी एक न हार बृजगोरी ॥३॥ संग बाल अनेक गोपाल लिये अबीर गुलाल भरे झोरी, एकै मृगनैनी कोकिलबैनी धावै धमके चमकै

दौरी, एकै चंचल ओ ढ़ेअंचल एकै वदन मलै रोरी ॥४॥

लेज ३.

मन बसे मोर वृन्दावनमें ॥ वृन्दावन बेली चम्प चमेली गुलदावरी गुलाबनमें, गेंदा गुलमेंहदी गुलहबास गुलखैं यह फूल हजारनमें, कदली कदम्ब अमरूद तूत फूलेरसाल सब साखनमें, भौंरा गुलजार बिहार करैं रस फूल फल पातनमें ॥ १॥ वन बागनके लटके फटके फल दागे दाखम दाखनमें, फफकी फुलवारी लवंग सुपारी बैपारी बैपारनमें, मालिनके लड़के तोड़ैं तड़के बेंचत बैठि बजारनमें, निम्बू नारंगी सब रस रंगी लेहु जौन जैहिके मनमें ॥ २ ॥ एकै एक संग कुरंग चलैं बिछुरैं कड़कैं किलकारनमें, तपसी जन जंगम जोगजती जब ध्यान धरैं पदमासनमें, बोलत विहँग सब रंग रंग किलकैं करीलकी डारनमें, गति शीतलमन्द सुगन्ध पौन सुख देत सदा सबके तनमें ॥ ३ ॥ खेलत फाग मनमोहन मधुरी धुनि ताल मृदंगनमें, डफ झांझ मजीरोंकी गमकैं छिरकैं भरि अतर सुगन्धनमें, रंग छैल छबीलेके छोहरा पिचकारी हनैं कुचकोरनमें ॥ छबि देखि छके शिवराम श्याम खेलत बनिता गोपीगनमें ॥४॥

होरी १.

देखो रे ऐसी त्रिभुवन रानी ॥ विनै करत कर जोरी कहत यश ब्रह्मादिक मुनि ज्ञानी, उदय अस्त कोउ भेद न पायो विविधि भांति अनुमानी, थके सब देव बखानी ॥१॥ नन्दगोप घर जन्म लियो है मथुरा आय तुलानी, विकल

विषाद देखि सुर पूरन कंसहि जानि गुमानी, दोऊ भुज तोरि उड़ानी ॥२॥ सुरसरि बहत सदा निर्मल जल सादर मुक्ति निशानी, सब जीवनको जन्म सँवारत सकल धर्म गुनखानी, हरत कलिकलुष गलानी ॥ ३ ॥ निशि दिन ध्यावत तव जश गावत सुर मुनीश विज्ञानी, बदरीदास पर बेगि दया करो हे शिव प्रिया भवानी, तुम्ही मेरी महरानी ॥ ४ ॥

होरी २.

जगदम्बासे विनय निहोरी ॥ धावहु बेगि विलम्ब न कीजे मारग दूरि कठोरी ॥ कीजिये विथ पाय गहि लीजिये बहुत भांति कर जोरी ॥ कह्यो समुझाइ बहोरी ॥ १ ॥ मैं अति विकल रहों बिनु दरशन मन मलीन मति भोरी ॥ तुम आनन्द करो विन्ध्याचल सुरति हमारी छोड़ी ॥ यही चिंता उपजोरी ॥ २ ॥ नहिं दिन खात राति नहिं सोवत देह दशा बिसरोरी ॥ बूड़त वीच समुद्र उबारो गही बांह बरजोरी, एती मेरी अरज सुनो री ॥ ३ ॥ दुखके सिंधु अपार अगममें मैं अब जात बहोरी ॥ बदरीदासपर बेगि दया करो गहो बांह बरजोरी॥ काज सब सिद्धि करो री ॥४॥

होरी ३.

रघुबरजी बैर करै ना ॥ सौ जोजन मरजाद सिंधुकी सो कोइ बाँधि सकै ना ॥ ताहि बांधि उतरे रघुनन्दन संग भालु कपि सैना ॥ समर कोइ जीति सकै ना ॥ १ ॥ होलीसी लंका जलाय दियो कपि पति तुम भागि बचे ना ॥ बैर

किहे नाहीं बरिऐहो तासे जाइ मिलै ना ॥ भागि तिहुँलोक बचै ना ॥ २ ॥ तुम जीओ अहिवात हमारो सांची कहौं पिय बैना ॥ करिकै उपाय बीर सब थाके पावक प्रबल बुझै ना ॥ जुक्ति कछु चलै ना ॥ ३ ॥ मैं तिरिया बहुभांति सिखाओं निशिचर कान करै ना ॥ तुलसीदास मूढ़ एक रावन फूटे ह्रदैके नैना ताहि कछु सूझ परै ना ॥ ४ ॥

होरी ४.

कान्हाने मोहिं आनि ठगो री ॥ नारिको रूप धरे मनमोहन आइ गयो मोरी खोरी मै जानों कोई नारिछबीली धाय चली मेरी ओरी ॥ झपटिकै चरन गहो री ॥१॥ चरन धोइ चरनोदक लीनो हँसिकै कंठ लगोरी । कोमल वचन मधुर सुनि सजनी तासे आनि फँसो री ॥ प्रेमवश होगई भोरी ॥२॥ हमको लै गये कुंजन वनको करि छल बैन कठोरी ॥ निपट अकेलि जानिकै मोहन अंचल धाइ धरोरी छैलै छैला नँदको री ॥३॥ यह ठगिया ठगि गयो सबनको यासे न काहु बचोरी ॥ सूरश्याम ऐसी कला निरखिकै पारब्रह्म प्रगटो री॥ इन्हैं विनवत करजोरी ॥४॥

होरी ५.

श्याम बिना मोहिं कछु न सोहाई ॥ अतर गुलाबकी थार लिहे कर चौमुख दीप जलाई ॥ हरिके दरश बिनु जिय मोर तरसै कैसेकै जियरा बुझाई ॥ मरों बिरहाकी सताई ॥ १ ॥ आवैके कहि गयो एसौंके फगुनवाँ अब कस देर लगाई ॥ एक दिन प्रान निकरि जैहैं घटसे तब का तूं

करिहो आई ॥ सुनो नँदलाल कन्हाई ॥२॥ पीछेसे ऊधो जोग लै आयो हमरो जिय तरसाई ॥ होली जलै हमहूँ जलि जावै वाहीकी धूरि उड़ाई ॥ देखो कैसी छबि छाई ॥ ३ ॥ इतनो वचन सुनि कुबरी मगन भई मनमें बहुत मुसकाई ॥ कृपा भई जदुनन्दनकी जब अपनी दासी बनाई ॥ सूरपर होत सहाई ॥ ४ ॥

होरी ६.

चलो री सखी श्यामको मनाई ॥ आयो वसंत सभै वन फूल्यो फागुन अधिक सोहाई ॥ खेलत फागु सभै अपने पुर अवरख अबिरा उड़ाई ॥ हमैं एको न सोहाई ॥ १ ॥ बाजूबन्द बिजायठ हरवा मोतिन मांग भराई ॥ तासबादलेकी अँगिया हमारी सारी केसरमें बोरवाई ॥ पहिरि हम काको देखाई ॥ २ ॥ गोकुल ढूँढ़ बृन्दावन ढूँढ़ों इत उत खोज कराई ॥ नन्दगांव बरसाना मैं ढूढ़यो सखियन संग लगाई ॥ मिलत कतहूँ न कन्हाँई ॥ ३ ॥ कासे कहों यह दिलकी बतियाँ कहि संग रैन गँवाई ॥ सूरश्याम दुरि देशवामें छायो कुबरी सवति बिलम्हाई ॥ शरन केकरि हम जाई ॥ ४ ॥

होरी ७.

श्यामकी मोहिं बात है प्यारी ॥ सुनि बात लाज मोहिं आवै भयों जगतसे न्यारी ॥ कल नहिं परत नैन बिनु देखे ऐसी भूल हमारी, मरों बिरहाकी मारी ॥ १ ॥ तीरथ धाम सबै ढूँढ़ि हारयों जोग जुक्ति तन जारी । हरि मोरे पास

भाँति नहिं जानों कैसे मिलहिं बनवारी ॥ भयों कोइल ऐसी कारी ॥२॥ जस चाहो तस करो हो मुरारी आशा चरन तिहारी ॥ अब तो कृपा करो जन ऊपर आयों शरन तिहारी ॥ भजों अब तोंहि बिहारी ॥ ३ ॥ करि सतसंग रंग अति पायों सतगुरु वचन सम्हारी ॥ मोहनशाहि लिख्यो उर अंतर मिलिगे अलख मुरारी कटा सब पातक भारी ॥ ४ ॥

होरी ८.

बृजमें आजु होरही होरी ॥ मैं जमुनाजल भरन जात री हमसे करत बरजोरी ॥ चूँदरि चीर सभैकी छीनत डारत रंगमें बोरी ॥ पकरि मुख मीजत रोरी ॥ १ ॥ जाको चहै ताको रंगहीमें बोरै मानत नाहिं एको री ॥ मति कोउ जाहु आजु पनियाँको मगमें श्याम खड़ो री ॥ बचो नहीं एको गोरी ॥ २ ॥ मुरली बजावत रंग उड़ावत श्याम रिझावत भोरी ॥ तुमरे रंग न खेलों रे मोहन कितनो पायँ परो री ॥ सुरति कँगनाकी करो री ॥ ३ ॥ हरिसे गुमान राधिका कीन्हो रंग घड़ा दीनों फोरी । रामसखे छबि देखि मगन भयो हरी राधा दोउ जोरी ॥ ऐसो मोहिं आनि मिलो री ॥ ४ ॥

होरी ९.

बरजो तू हो जशोमति कान्हा ॥ लै गागरि पनियांको चली मैं हरि मारग अठिलाना ॥ सर्व सोनकी गागरि फोरचो आपु खड़ा मुसकाना ॥ लोग सब देत हैं ताना ॥ १ ॥ अबहीं लला मेरो बारेसे भोरे नान्हे निपट नदाना वै का जानैं

रसकी बातें जानत खेल औ खाना॥ भूलि गयो तुमरो ज्ञाना ॥२॥ ताहि समैं हरि आपुहि आयो, जननीसे रोदन ठाना॥ हे रे मातु मोहिं बहुत खिझावत देदै आंखोंसे साना॥ उलटी आई उरहाना ॥३॥ तुम साँची तुम्हरो सुत साँचो हमहीं करत बहाना॥ सूरश्याम बृज बसब छोड़िकै बृज तजि होब बिराना॥ करब अपने मन माना॥ ४॥

होरी १०.

बरजो यसुमति अपना मुरारी॥ मैं जमुना असनान करन गयों अम्बर धरत उतारी॥ लैकै चीर कदम चढ़ि बैठो मैं जलमाँझ उघारी॥ बहुत बिनती कै कै हारी॥ १॥ राह चलत मोहिं कंकड़ मारत देत हजारन गारी॥ यह अनरीत भई है बृजमें दिनहीं होत ठगहारी॥ खात दधि मोरि उतारी॥२॥ मेरो लाल सुतै पलनापर देखो नैन पसारी॥ झूँठ कहत तुमको डर नाहीं अबहीं उमरियाकी बारी, गरब मातलि बृजनारी॥ ३॥ इतना कहत मुसकाई उठी है प्रभुकी ओर निहारी॥ कृष्णगुलाम दयाकरि मानो अब हैं शरन तुम्हारी॥ मदनमोहन बनवारी॥ ४॥

होरी ११.

साँवरो जो मैं देखन पैहों॥ ठाढ़ि रहो तूँ भगो न डरो मैं खेल अनेक खेलैहों॥ गावन दे री बनावन दे री जो अपनी दिशि पैहों॥ तबै उनको समुझैहों॥ १॥ जोरि बटोरि जोरी जोरिनलै धूम धमारि मचैहों॥ बीन मृदंग उमंग चंग डफु एकै ताल मिलैहों॥ और करताल बजैहों

॥२॥ नीर गुलाब कुमकुमा लेकर केशरि मुख लपटेहों ॥ तापर अरुन अबीर घोरि घट नख शिखलौं अन्हवैहों ॥ लालजीको लाल बनेहों ॥ ३ ॥ घूंघुरमें घूधककी धुरेटनि में धसिहों धरि लेहों ॥ तापर अरुण पराग मांग भरि नकबेसरि पहिनेहों ॥ नारिकी नाच नचैहों ॥ ४ ॥

होरी १२.

साँवरो जो मैं देखन पावों ॥ भोर जबै आवै जदुनन्दन मैं गोपिनसँग ल्यावों ॥ मचै धमारि खेल वृन्दावन ललित रंग बरसावों ॥ सखनकी भीर भगावों ॥ १ ॥ ढोल नगारा भेरी डफुके बिच ले मिरदंग बजावों ॥ गारी दे गुरुजनकी लाज तजि नवलनेह पर धावों ॥ सकल करतूति लखावों ॥२॥ झूरि अबीर ललमुख लावों केशरि जस अन्हवावों ॥ शिर सेंदुर गर मुक्तन माला गहिकर कुंजन मँगावों ॥ सखिनके पायँ परावों ॥ ३ ॥ आवतहौ फिर जात धामसे मैं तुम्हरे मन भावों ॥ कुँअर कान्ह राधेजीकी जोड़ी निश दिन चरन मनावों ॥ सूरपर प्रेम बढ़ावों ॥ ४ ॥

होरी १३.

सांवरो जहँ खेलत होरी ॥ कर लीन्हें कंचन पिचकारी केशरि रंग भरो री ॥ छिरकत रंग हुलसि हिय हरषत निरखत है मुख मोरी ॥ चलो रंग डारी रे गोरी ॥ १ ॥ धरि भुज धाय सकुचत मन मिलि फिर चहत छुटो री ॥ छूटीं लट कुंडलबिच अटकीं बेशरि पट अरु झोरी ॥ जतन हम कवनि करो री ॥ २ ॥ कोउ सखि धाय कृष्ण

गहि लीनों कोउ लें रंग घोरी ॥ मची कीच मग बीच वृन्दावन ऐसो रंग चलो री॥ मानो बरसै झकझोरी ॥३॥ धनि गोकुल धनि वृंदावन है जहवाँ रहस रचो री ॥ सूर कहत यह वृजमें बसिमें बसिकै कोटि कोटि हम जोरी ॥ डारों किनका जैसे फोरी ॥ ४ ॥

होरी १४.

साँवरोको चरित्र सुनो री॥ गृह गृहसे निकरीं वृजबनिता झपटि चलीं जल ओरी॥ मंजन हेत धँसीं जमुनामें कोउ साँवरि कोउ गोरी ॥ करैं जलमें झकझोरी ॥ १ ॥ ताही समै वृजराज साँवरो जमुना तट पहुँचो री ॥ लैकै चीर कदमके ऊपर मुरली शब्द करो री॥ चकृत सखी होइ गई भोरी ॥ २ ॥ सब सखियें पट ढूँढन लागीं काहूकी दृष्टि परो री॥ एक प्रवीन सखी उठि बोली ऊपर कदम लखो री॥ चीर दहुँ कौन धरो री ॥३॥ सब सखियनमें एक राधिका प्रेम अधिक रस बोरी ॥ शीश नवाइ कहत पट दीजे मैं बाला मति थोरी ॥ सूर दोनों कर जोरी ॥ ४ ॥

होरी १५.

राधा हरि खेलत होरी॥ इतते ग्वाल सखा सजि मोहन उत वृषभान किशोरी ॥ लै लै अबीर गुलाल उड़ावत ऐसे न फागु मचो री ॥ कौन छबि तौल करो री ॥ १ ॥ मदमाते गुंजत अलि कुंजन चहुँकित सुमन खिलो री ॥ आनि मिले तहँ श्याम राधिका निज साज सजो री ॥ मनौ रति वश भई भोरी ॥ २ ॥ बाजत मृदंग चंग डफु

और सितार गनो री ॥ गावत हैं मिलि मुंज सुरन सब लखि मुँह मोद लगो री ॥ चलत रंगभरि पिचकोरी ॥३॥ छायो अबीर गुलाल रंग नभ जनु निशि प्रगट भयो री ॥ जुगल भयो रनधीर चन्द्रसम और न छत्र लखो री ॥ मनो महिमें प्रगटो री ॥ ४ ॥

होरी १६.

श्याम बिना होरी कौन खेलावे ॥ सखि जोहत मगमें लखि मोहन तन मन बिरह जनावे ॥ घर घर फाग मची बृजभीतर होली सभै कोई गावै ॥ मनों साजिकै दल धावै ॥१॥ छनमें आनि मिले यदुनन्दन लखि प्यारी मन भावै ॥ पकरि श्यामको लेत अंक भरि हँसि हँसि वदन देखावै श्यामको जिय ललचावे ॥ २ ॥ रच्यो फागु दोनों हिलमिलकै चटकीली मटकावे ॥ रसिया श्याम कपोल मलत दोउ अरु कुच कर धै पावै ॥ तिहूँपर रंग लपटावे ॥ ३ ॥ रसके वश ह्वै श्याम राधिका वरनत नहिं बनि आवै ॥ वसन बिहीन मस्त ह्वै नाचत दोउ कर भाव बतावे ॥ दास लै रंग बरसावे ॥ ४ ॥

होरी १७.

हे मुरलीके बजैया हमैं गारी देत कन्हैया हाहा करत हथोरी लगावत नोखे तू बेनु बजैया ना तुम्हरी सारी सरहज मैं ना तुम्हरी भवजैया ॥ कौन तुम गारी देवैया ॥ १ ॥ भगिनी तुम्हारी भवनमें बैठी द्वारे जशोमति मैया ॥ उनको जाइ धाइ फगुआओ उनसे करो ठकुरैया ॥ कौन तुम हमसे

बोलैया ॥२॥ शपथ करो गुरु मातु पिताकी रारि करो दूनों भैया ॥ मलिहों वदन बोलि नहिं ऐहैं भूलिजाय चतुरैया ॥ लूटि जैहैं सब गैया ॥ ३ ॥ करु मन प्रेम नेम करुनानिधि कृष्ण चरन सेवकैया ॥ जन महिपाल फाग जिन गावत और न आनि उपैया ॥ एक बृजराज दुहैया ॥ ४ ॥

होरी १८.

मुरलीधर श्याम न आयो । बृज तजि गवन कियो जदुनन्दन कंसने पकरि मँगायो ॥ अक्रूर क्रूर हरि लै गयो हीरा लाल जड़ायो ॥ इन्हें कुबरी बिलम्हायो ॥१॥ मारि गयन्द प्रभु दंत उखारयो करसे सूँड़ घुमायो ॥ कंस पछारि धरयो धरनीपर वसुदेवकी बन्दि छोड़ायो ॥ दुःख देवकीको मिटायो ॥ २ ॥ उग्रसेन बन्दाखानामें ताहि काढ़ि अन्हवायो ॥ लीन्ह राज बैठाइ सिंहासन भूप बहुत मन भायो ॥ ऊधो सँग रैन गँवायो ॥ ३ ॥ जब ना गयो तुम्हारे सँग ऊधो अब कैसे पछितायो ॥ सूर श्याम यह न म जपत हैं कबसे बृजमें छायो दरश गोपिन सब पायो ॥ ४ ॥

होरी १९.

कंस नहिं आवत तीर बड़े बेपीर मुरारी । लगन लगाय देखाय मधुर छबि मनभावन अति प्यारी ॥ प्रेम सनेह नेहका फाँसा मेरे गले बिच डारी ॥ हरी गति मति बुधि सारी ॥ १ ॥ मन्द मन्द मुसकात मधुर छबि दूरिसे लेत निहारी ॥ मन्द हँसत दृगकोर विलोकनि लगत हिया बिच कारी ॥ कठिन लय है बनवारी ॥ २ ॥ कौन जतन

करि तुमहीं रिझावें हे मोहन गिरिधारी ॥ तुम तौ हो तिरलोकके नायक मैं पापिनि बड़ी भारी ॥ करो कब सुरति हमारी ॥३॥ मैं टेरत हिय बिच तुमहींको तन मन आप बिचारी ॥ कठिन कठोर भयो प्रभु काहे विरहा सतावत नारी ॥ सूरको लेत उबारी ॥ ४ ॥

होरी २०.

काल कहां थे कन्हाई राति मुझे नींद न आई ॥ तुम्हारी तौ रैन चैनमें गुजरी कुबरीसे प्रीति लगाई ॥ मैं तलफत अपने गृह भीतर बिनु हरिदरश न पाई ॥ श्याम बिनु जिय घबराई ॥ १ ॥ हे हो कान्हा मोहिं बात बुझावत सवतिकी करत बड़ाई ॥ अपने जले कछु कहि बैठोंगी नांहक जिय तरसाई ॥ हमैं एकहू न सुहाई ॥२॥ सारी रैन सौतिन सँग बीती हमरी सुरत भुलाई ॥ बोलो तौ बोलो नहिं कहों जसुमतिसे कुल कलई खुलि जाई ॥ जहँ सारी रैन गँवाई ॥ ३ ॥ सूरश्याम हरिको समुझाके हमरो विरह बताई ॥ राधेसे छल करिकै भागत तुम हरि जिय ललचाई ॥ कहत हौं बात बनाई ॥ ४ ॥

होरी २१

बृजमें ऐसी होरी मचाई ॥ इतसे आई सुघरि राधिका उतसे कुँअर कन्हाई ॥ खेलत फाग परस्पर हिलि मिलि यह छबि वरनि न जाई ॥ सो घर घर बजत बधाई ॥१॥ बाजत ताल मृदंग झांझ डफ, मजीरा सहनाई ॥ उड़त गुलाल कुमकुमा केशर रहत सकल बृज छाई ॥ मानो

मेघवा झरिलाई ॥ २ ॥ राधे जी सैन दियो सखियनको रुंड झुंड उठि धाई लपटि झपटि गई श्याम सुंदरको बरबस पकरि मँगाई ॥ लालजीको नाच नचाई ॥ ३ ॥ छीन लियो है मुरली पिताम्बर शिरपर चुंदरी ओढ़ाई ॥ बेंदी भाल नैन विच काजर नकबेसरि पहिराई ॥ सूर छबि नारि बनाई ॥ ४ ॥

होरी २२.

भला श्याम आयो है खेलन होरी ॥ काहूको अबीर केशर रंग छिरकत काहूके छीट परो री ॥ कोऊ कहै मैं तो सगरि भाजि गयों अब मैं कैसी करों री ॥ धीर नहिं जात धरो री ॥ १ ॥ सब सखियें मिलि घेरि लियो है श्याम गह्यो बरजोरी ॥ फेंट पकरि केशर रंग छिरकत राधे हँसैं मुख मोरी ॥ श्याम मोसे करत गरीरी ॥२॥ मैं जमुनाजल भरन जात री केशर रंगमें बोरी ॥ प्रेममगन तनकी सुधि नाहीं अंचल मेरो उड़ो री ॥ श्याम जोबन ललचो री ॥३॥ कर डारचो चोलीके भीतर सखियें भई सब भोरी ॥ सूरश्याम छबि देखि मगन भयो चितवन चंद्र चकोरी ॥ काम छबि दखि हलोरी ॥ ४ ॥

होरी २३.

कहिये ऐसी हाल हमारी ॥ कहि न जात बिछुरन कर बेदन सहि न जात दुख भारी ॥ उठत कराल आहि कै बैठत विरह अग्नि तन जारी ॥ पीर नहिं जात सम्हारी ॥१॥ छन आँगन पिय पिय कहि घुमरत छन चढ़ि जात अँटारी ॥

छन पछितात दोऊ कर मींजत का तकसीर हमारी॥ श्याम मोरि सुरति बिसारी ॥२॥ भूले असन वसन सुधि नाहीं भूलि गई तनसारी। दूनी पीर उठत उर अन्तर सूनी सेज निहारी ॥ डसै जैसे नागिनि कारी ॥३॥ चहुँदिशि चकृत फिरत राधिका कोकिलकी अनुहारी॥ नवलदास जल वरसि जुड़ाने मानो विनय हमारी॥ श्याम तुम्हरी बलिहारी ॥४॥

होरी २४.

प्रीतिकी रीति महादुख भारी॥ लागी प्रीति जासे छूटै सखीरी तीर लगै जैसे कारी । कसकत है जिय निकसत नाहीं सुसकत बैठि विचारी ॥ मानो गोरी बिरहकी मारी ॥१॥ एक बेरकी प्रीति सखी री यह दुख कैसे निवारी॥ हम चाहत वे चितवत नाहीं ऐसो निठुर बनवारी॥ ओर चितवै न हमारी ॥ २ ॥ बिछुरनकी गति चकई जानै होत पियासे न्यारी । होत भार नित आश मिलनकी हमको दई है बिगारी ॥ हमैं तजि दीन बिहारी ॥ ३ ॥ दीनदयाल दया करि पावों आवों शरन तिहारी ॥ गंगाराम लगी डोरी प्रेमकी अब कहां जैहो मुरारी ॥ हृदय तुमहींको निहारी ॥ ४ ॥

होरी २५.

आली री मैं सैयां संग सोई॥ रैन समय सखि अपने महलनमें सैयांके गल लगि सोई॥ टूटि गई मोरि नाककी बेसरि सासु डरन उठि रोई॥ सेजरिया चहूँदिशि टोई॥१॥

सासु सुनै उठि मारन धावै ससुरो सुनैं कस होई ॥ ननद सुनै अकलंक लगावै कौन मरद संग सोई ॥ नई नकबेसरि खोई ॥ २ ॥ इतना सुनत पिय गोदमें लीन्हों आंसु पोछैं मुख धोई ॥ होत प्रात नकबेसरि गढ़ैहौं अँगिया दैहौं बदलोई ॥ रिसाय करें [illegible] कोई ॥ ३ ॥ छूटि गई डर ससुर सासुकी ननद बिरानी जा[illegible] ॥ जौहर दीन पिया मो चाहत जोई करै सोई होई ॥ मुख्य मालिक हैं ओई ॥ ४ ॥

होरी २६.

गोरिया रे बिरहा तन जारी ॥ पिय पिय कहत मैं पीयरि भइलिउँ बैदा लखै नहीं नारी ॥ अंत भेद कछु पावत नाहीं मरत बिरहकी मारी ॥ पिया मोरि सुरति बिसारी ॥ १ ॥ नैहर नगरी हमैं नहिं भावत मन उचटै जैसे खारी ॥ दिन नहिं चैन रात नहिं सोवत सूनी सेज हमारी ॥ पिया मोहिं छोड़ि सिधारी ॥ २ ॥ नैया हमारी भँवरमें अरुझी औघट घाटमें डारी ॥ थाह घाट कछु पावत नाहीं कैसेके पार उतारी ॥ कठिन बोझा है भारी ॥ ३ ॥ बिरहकी चोट मिटै कहु कैसे बैदा गये सब हारी ॥ कहते हैं भूढ़ू तबै दुख मिटिहैं मिलिहैं चतुर खेलारी ॥ जिन्होंसे उठी यह गारी ॥ ४ ॥

होरी २७.

हेरत प्रीतम बैस बिताई ॥ काशी मैं ढूँढ़ेउँ वृन्दावन ढूँढ़ेउँ ढूँढ़ेउँ अयोध्यामें जाई ॥ ग्राम धाम अरु पर्वत जंगल देश विदेश तराई ॥ कतहुँ नहिं देत लखाई ॥ १ ॥ छापा तिलक

अरु तुलसीकी माला बहुविधि भेष बनाई॥ जोगिनि बनि पहरचो तन गेरुआ अंग बिभूति रमाई। पियाहित धूनी जलाई॥२॥ तीरथ व्रत अरु नेम निबाहेउँ कीन्हेउ लाख उपाई॥ अंत हारि विष खैबा चाहत बेगि यही मन भाई॥ पिया मोर जिय तरसाई॥३॥ कहत सुँदरगिरि बिरहिनि व्याकुल पियपर ध्यान लगाई॥ है पिय पास ढूँढ़े नहिं पाऊँ अचरज लखि सकुचाई रह्यों पिय शीश नवाई॥४॥

होरी २८.

भला सैयाँ हो मेरी बात न मानी॥ पूरुब दिशा मति जायो हो स्वामी पुरुबको लागत पानी॥ पानी पियत पिय तुम मरि जैहो हम धन होब बिरानी॥ बृथा जैहैं जिन्दगानी॥१॥ दखिन दिशा मति जायो हो प्यारे दखिनकी नारि सयानी॥ राति सुतैहैं लाली पलँग पर दिनमें चलत मस्तानी॥ पिया तेरी अकिल भुलानी॥२॥ पश्चिम दिशि मति जायो हो सैयाँ जहँ मेवाकी खानी। मेवा दे सेवा बहु करिहैं बोलत मधुरी बानी॥ सुरति लखिकै अरुझानी॥३॥ उत्तर दिशा अयोध्या नगरी चलहु पिया प्रन ठानी॥ राम लषण जहँ बिहरत निशि दिन उनको चरन हिय आनी॥ मुक्ती दैहैं जन जानी॥४॥

होरी २९.

बावरो सखि ज्ञान हमारा॥ सुदिनको दिन नगिचाना सखी री पिय पठयो अनवारा॥ चारि कहार डोली सँग लीने उतरि परे बिच द्वारा॥ बिदा करि माँगत प्यारा

॥१॥ सँगकी सखी सब देखन आई छूटत संग तिहारा॥ मात पिता बिछुरन करि दीन्हों साईति कौन विचारा ॥ अकेली विदेश सिधारा ॥२॥ बालापन लरिकन सँग बीता भूले हैं कौल करारा ॥ जब सुधि आवत अपने पियाकी कांपत तन मन धन सारा ॥ जन्म उनहींसे गुजारा ॥३॥ भूषन बसन सभै मोर छूटे खान पान सब टारा ॥ छीतूदास धन चलली हैं सासुर माँग लै सेंदुर डारा ॥ जहाँ पिय सेज सँवारा ॥ ४ ॥

होरी ३०.

बावरो सखि ज्ञान है मेरा॥ हाल सुने गवनेको सखी री जिय तलफत है मेरा ॥ भई अब सोच सोच जिय बाढ़े नाऊ आयो पियकेरा॥ चलो गवनेको सबेरा ॥१॥ आइ गयो अनवार गवनको छोड़हु घरको बसेरा ॥ चारि कहार डोली लै आयो कहेउ द्वार पर डेरा ॥ आजु सब फाटक घेरा ॥ २ ॥ संगकी सखी सब पूछन लागीं कब करिहो सखि फेरा ॥ सात समुद्र पार मोर सासुर जहवाँ नाव नहीं बेरा ॥ मिलन अब कठिन करेरा ॥ ३ ॥ मस्तराम कहैं सैयांको मिलावो जिय नेवछावर तेरा ॥ याही गवनसे अवन अब नाहीं याही हाल सब केरा॥ झूँठ दुनियाँको बसेरा॥४॥

होरी ३१.

केशर बाग लगाई मजा बादशाहने पाई॥ पुरुब दिशासे चल्यो है फिरंगी गंगामें लाम बँधाई ॥ लाम बाँधिकै पार उतरिगे कम्पूमें खेमा गड़ाई॥शहरबिच धूम मचाई॥१॥

निशि भीतरमें कूंच कियो है मारूको डंका बजाई॥ जाइके घेरेउ लाखनपुरको शहर लोग अकुलाई ॥ हजरतको खबर जनाई ॥२॥ उस लखनउवामें एक बुर्ज है कंचन झालरि छाई ॥ चौमुख वाके चारि बुर्ज हैं चारों पै तोप धराई ॥ तुरत सब तोप दगाई ॥३॥ दखल कियो अँगरेज बहादुर थाना पुलिस बैठाई छीतूदास हजरत सुधि कीन्हीं अपने मन पछिताई ॥ फिरी अंगरेज दोहाई ॥ ४ ॥

होरी ३२.

क्या तूँ गुमान करो जिंदगीको ॥ जिस साहेबने जन्म दियो है रूप दियो सब नीको॥ रूप देखि अभिमान न कीजे रूप रंग सब फीको ॥ बिना सुमिरे हरिजीको ॥ १ ॥ ब्राह्मण होइके वरन पहिचानो पेंड़ पूजो तुलसीको ॥ पाप पखंड छोड़िदो दिलसे नाम भजो तूँ हरिको जो मालिक है सबहीको ॥२॥ राम रहीम एकै तुम जानो लेतेहो नाम नबीको। रोजा निमाज बन्दगी करिकै कलमा पढ़त सब ठीको ॥ करो उरधार सभीको ॥३॥ कहत करीम कर्म यह कीन्हों प्याला मैं पीहों अलीको ॥ प्याला पीकै मगन होइ बैठे रहत किनारे नदीको ॥ ध्यान निशिवासर पीको ॥४॥

होरी ३३.

कलजुगकी है दोहाई धर्म निबहब कठिनाई ॥ दाताके घर सम्पति नाहीं सूम महा धन पाई॥ पतिव्रता सोइ नारि जक्तमें ताको पति सौदाई ॥ कहो अब कवनि भलाई ॥१॥

देव पित्र तिथि मिति नहिं मानत वरन विवेक गँवाई ॥ पूजा असुर देत सनमानत घूँघुर दे झारि लाई ॥ सोई जग सिद्धि कहाई ॥२॥ जो कछु वेद पुरान सुना है सो अँखिया देखलाई॥परवनिता सँग भोग करत हैं घरहूँकै नारि दुराई॥ कहैं सब लोग लुगाई ॥३॥ दुर्गादास कठिन कलजुग है, उलटी रीति चलाई ॥ अब तो नाथ निबहब मुसकिल है चाहत धर्म नशाई ॥ होहु रघुबीर सहाई ॥ ४ ॥

होरी ३४.

श्याम श्यामासे होरी खेलत आजु नई ॥ सखी सखा भई सखा सखी भये जसुमति भवन गई ॥ डफ करतार बजावत गावत नाचत थेई थेई ॥१॥ गोरो श्याम साँवरी श्यामा दूनी रति ह्वै गई ॥ अदभुतरूप निरखि जदुपतिको गति मति बिसरि गई॥२॥ चोरी और दानको लेवो तुमको बहुत फली ॥ होत बिहान बँधैहों भवनमें तब वृषभानु-लली ॥३॥ फगुआ देउ मँगाइ लालको कंचन रतन मई ॥ सूरश्याम यह रूप निरीखत उघरि गई कलई ॥ ४ ॥

होरी ३५.

होरी खेलत राम लला ॥ इतते नागर सखा साथले उत सिय सँग अबला ॥ उड़त गुलाल कुमकुमा केशरि दोउ दिशि रंग चला ॥ १ ॥ उत भीजी सारी नारिनकी इत शिर केश लला॥ खेलत फाग परस्पर हिलमिल मचिगै रंग चहला ॥ २ ॥ इतते बजत मृदंग चंग डफु औ सितार तबला ॥ उत करताल बजाइ गाइ हँसि करि करि कोटि

कला ॥ ३ ॥ इतते काढ़ि अबीर मूठ ले चली चटक नवला ॥
चमकि मली मुख मिली श्यामतन जैसे घन चपला ॥ ४ ॥

होरी ३६.

आजु अवधपुर रंग चला ॥ इतते लखी लषन रिपुसूदन दौरि कीन्ह हमला ॥ गहि भुज अबिर मली कपोल दोउ केशरि कुचन मला ॥ १ ॥ ललकारी तारी दे सिय सखि धरहु दोऊ छयला भूषन भेष नारिको कीजे लीजे देउँ भला ॥ २ ॥ सुनि धाई आई सखियें सब भरतहि आनि छला ॥ गई ल्याइ बतरस लगाइकै जहँ सियकी अमला ॥ ३ ॥ साज साजि बनिताको नीको जैसी हैं कमाल ॥ लीजे नाथ बहिनि ये तुमरी कीजे दृग सफला ॥ ४ ॥

सोरठा.

यहि पुस्तकको नाम, फागुसंग्रहै जानिये ।
कीरति सीताराम, सब देवनको गुण कहों ॥
कीरति राधाश्याम, अरु मानुषरस कछु कहों ।
करि द्विज देव प्रनाम, साधोलाल कर जोरिकै ॥
कीन्हीं कृपा कृपालु, एवमस्तु बानी कही ।
रच्यो है साधोलाल, फागुनमें रसिकन सुखद ॥
वस्ती ढेमा ग्राम, कायथ वंश बखानिये ।
तेहि बिच ताहि मुकाम, जिला जवनपुर जानिये ॥
फागुनको है मास, मिती द्वितीया जानिये ।
लागि सभा जनवास, शुक्ल पक्ष दिन सोम है ॥

दोहा.

एकके ऊपर नौ लिखो, लिखो चारि पर चारि ।
संवत तेहिको जानिये, गुनी लेहिं निरुहारि ॥
बहुत बड़ाई को कहे, बढ़ै बहुत इतिहास ।
थोरमें वरनन किहेउँ, धनि धनि फागुन मास ॥

॥ इति चौताल फागसंग्रह समाप्त ॥

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान :

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५,
फैक्स -०२०-२६८७४९०७.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१
दूरभाष/फैक्स- ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS

